04 - भारत में सहकारिता का है अमृतकाल

05 - हमें सच्ची का आम आदमी चाहिये जिस पर हम लिख सकें

06 - जल, नारीत्व और प्रतीक्षा के माध्यम से एक नृत्य-यात्रा

07 - ग्वालियर से बैंगलोर के लिये नई रेल सेवा का हुआ शुभारंभ

A Daily News Magazine

भोपाल

शुक्रवार, 27 जून, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 288, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

शुभांशु के अंतरिक्ष गमन से इसरो के मानव मिशन में मदद मिलेगी

प्रियंका

भारत के शुभांशु शुक्ला और तीन अन्य अंतरिक्ष यात्री इंटरेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) के लिए रवाना हो गए हैं।

एक्सियम-4 मिशन के तहत ये चारों अंतरिक्ष यात्री 14 दिनों तक आईएसएस में रहेंगे।

इस मिशन में कई बार देरी हो चुकी है।

रॉकेट में पाई गई तकनीकी खामियां और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में रिसाव जैसी समस्याओं की वजह से कई बार ये मिशन रोका गया है। इससे पहले राकेश शर्मा पहले भारतीय थे, जो साल 1984 में रूसी मिशन के तहत स्पेस में गए थे। उस वक़्त ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का जन्म भी नहीं हुआ था।

यह एक कमर्शियल मिशन है, जो एक्सियम स्पेस नाम की अमेरिकी कंपनी, नासा और स्पेस एक्स के साथ मिलकर ऑपरेट किया जा रहा है। यह कंपनी का चौथा मिशन है और इसमें पहली बार कोई भारतीय एस्ट्रोनॉट होगा।

एक्सियम-4 मिशन एक कमर्शियल स्पेस फ़्लाइट है। ह्यूस्टन की कंपनी एक्सियम स्पेस इस अभियान को चला रही है। इस एक्सियम-4 मिशन में एक सीट भारत ने ख़रीदी, जिसके लिए 550 करोड़ रुपए की क़ीमत चुकाई है। उस ऐस्ट्रोनॉट सीट पर ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला हैं। यह अंतरिक्ष यान स्पेसएक्स रॉकेट के ज़रिए फ़्लॉरिडा के नासा केनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च हुआ है।

नासा की वेबसाइट के मुताबिक़ इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन जा रहे इस अंतरिक्ष यान में ग्रुप कैप्टन शुक्ला के साथ पौलेंड के स्लावोस्ज़ अज़नान्स्की विज़नियेवस्की, हंगरी के टीबोर कापू और अमेरिका की पेगी व्हिट्सन भी हैं।

एक्सियम स्पेस में ह्यूमन स्पेसफ़्लाइट की डायरेक्टर पेगी व्हिट्सन इस कमर्शियल मिशन को कमांड कर रही हैं। शुभांशु शुक्ला इसके पायलट हैं और बाकी दो एस्ट्रोनॉट मिशन स्पेशलिस्ट के तौर पर भेजे गए हैं।

साल 1984 में भारत के एस्ट्रोनॉट विंग कमांडर राकेश शर्मा सोवियत संघ मिशन के साथ अंतरिक्ष में गए थे। एक्सियम-4 के ज़रिए कोई दूसरा भारतीय इस अभियान के तहत इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) जाएगा। कुछ और एस्ट्रोनॉट्स के भी नाम लिए जाते हैं, जैसे कल्पना चावला या सुनीता विलियम्स। वे भारतीय मूल की हैं, लेकिन भारतीय नहीं।

विज्ञान मामलों के जानकार पल्लव बागला कहते हैं कि एक्सियम-4 भारत के लिए इसलिए अहम है क्योंकि भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को अपने मानव मिशन की दिशा में इससे मदद मिलेगी।

गगनयान मिशन भारत का अपना पहला स्वदेशी मानव मिशन है, जिसमें एक भारतीय को भारतीय रॉकेट के ज़रिए श्रीहरिकोटा स्टेशन से अंतरिक्ष भेजा जाएगा। उम्मीद है कि 2027 में यह मिशन अंतरिक्ष भेजा जाएगा।

ये गगनयान की ओर छोटे-छोटे क़दम बढ़ाने की तरह है। हम इस अभियान में कुछ सीख पाएं इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति जो बाइडन ने एक समझौता करके आगे बढ़ाया था और अब ये हो रहा है। 41 साल बाद हमारा एस्ट्रोनॉट अंतरिक्ष में जा रहा है। उनके मुताबिक़, 2035 तक एक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन मिले। प्रधानमंत्री मोदी ने इसरो को कहा है कि एक भारतीय को हमारे रॉकेट से, हमारी ताक़त से चांद पर भेजा जाए। 15 साल का रोडमैप इसरो के लिए साफ़ है। उस रोडमैप में आपके एस्ट्रोनॉट को एक्सियम-4 मिशन के तहत भेजना पहला क़दम है। एस्ट्रोनॉट को एक इंटरनेशनल सैटिंग में पूरी ट्रेनिंग मिल रही है। इसरो के पास अभी तक ह्यूमन स्पेस फ़्लाइट का अनुभव नहीं है। वो एक अलग ही क्षेत्र होता है। अभी तक हम सैटेलाइट लॉन्च करते आए हैं लेकिन मानव मिशन मुश्किल काम है।'

मिशन पायलट के तौर पर शुभांशु शुक्ला की भूमिका मिशन की लॉन्चिंग, ऑर्बिट में पहुंचने, आईएसएस पर इसकी डॉकिंग, इसके वापस आने और सुरक्षित तरीक़े से लैंडिंग समेत हर चरण में अहम है। मिशन के दौरान पृथ्वी पर मिशन कंट्रोल टीमों से संवाद करने की ज़िम्मेदारी भी उनकी होगी। एक्सियम-4 चूंकि एक कमर्शियल स्पेसफ़्लाइट है, इसलिए इसमें कई प्रयोग भी किए जाने हैं। नासा की वेबसाइट पर जो जानकारी है उसके मुताबिक़, इस मिशन में साइंस, आउटरीच और कमर्शियल एक्टिविटीज़ पर फ़ोकस होगा। शुभांशु शुक्ला समेत एक्सियम-4 की टीम बीज अंकुरण और अंतरिक्ष में पौधे कैसे उगते हैं, इस पर भी अध्ययन करेगी। पल्लव बागला कहते हैं, 'एक्सियम-4 मिशन में करीब 60 साइंटिफ़िक एक्सपेरिमेंट किए जाने हैं। जो एक्सियम के पिछले तीन मिशनों में नहीं हुए थे। क़रीब तीस देशों के एक्सपेरिमेंट ये मिशन लेकर जा रहा है। उसमें से कई प्रयोगों का हिस्सा शुभांशु शुक्ला होंगे। भारत के अपने वैज्ञानिकों ने इनमें से सात एक्सपेरिमेंट का सुझाव दिया है। भारत ने कभी अंतरिक्ष में एस्ट्रो-बायोलॉजी के एक्सपेरिमेंट नहीं किए हैं।'

पल्लव बागला कहते हैं कि इन सात के अलावा भी पांच ऐसे एक्सपेरिमेंट हैं, जो इसरो और नासा मिलकर करेंगे, लेकिन इनके बारे में अब तक विस्तार से बताया नहीं गया है। शुभांशु शुक्ला अंतरिक्ष से कुछ आउटरीच एक्टिविटीज़ भी करेंगे। इसके तहत वो लखनऊ में जिस स्कूल से पढ़े हैं, उसके विद्यार्थियों से बात करेंगे, फिर वो अंतरिक्ष वैज्ञानिकों, स्टार्टअप्स से बातचीत करेंगे। गगनयान भारत का पहला मानव अंतरिक्ष मिशन 'गगनयान' है। ये अभियान अपने आख़िरी चरण में बताया जा रहा है और अगर सबकुछ ठीक रहा तो 2027 में ये अंतरिक्ष जाएगा। भारत की योजना है कि वो इस अभियान के तहत अपने चार अंतरिक्ष यात्रियों को स्पेस भेजे।

इस मिशन के तहत अंतरिक्ष यात्रियों को 400 किलोमीटर की कक्षा में भेजा जाएगा जिसके तीन दिन बाद उन्हें वापस आना होगा।

भारत ने इसके लिए चार अंतरिक्ष यात्रियों को चुन भी लिया है और शुभांशु शुक्ला भी उसमें शामिल हैं।

पल्लव बागला कहते हैं कि 'अंतरिक्ष के लिए मानव मिशन भेजना आसान काम नहीं है। अभी तक केवल तीन देशों- रूस, अमेरिका और चीन ने ही ऐसा अपनी ताक़त पर किया है। मनुष्य को अंतरिक्ष में भेजना आसान है, वापस लाना ज़्यादा मुश्किल है। वो कहते हैं, 'भारत के गगनयान मिशन के लिए एक्सियम-4 बहुत ज़रूरी और पहला क़दम है. बच्चा जब पैदा होता है तो वो तुरंत दौड़ना शुरू नहीं करता। गगनयान मिशन को अगर बच्चा मानें, तो ये यानी एक्सियम-4 मिशन उसमें घुटने के बल चलने स्टेज है।' पल्लव बागला का मानना है कि राकेश शर्मा जब गए थे तब दौर ऐसा था, जब भारत का रुख़ रूस की ओर ज़्यादा था।

बागला कहते हैं, 'वो भारत-रूस का मैत्री मिशन था। उस समय भारत ने रूस को पेमेंट नहीं किया था।' 'इस बार जब शुभांशु शुक्ला जा रहे हैं एक्सियम-4 मिशन के तहत, ये एक कमर्शियल मिशन है। इसमें इसरो और नासा की साझेदारी ज़रूर है लेकिन इस साझेदारी के बीच में एक कमर्शियल हित है क्योंकि एक्सियम-4 एक कमर्शियल कंपनी है।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित रिपोर्ट के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

कुर्सियाँ मिलीं जिन्हें कुलीन हो गए,
नोट छापने की इक मशीन हो गए।
सभ्य हम हुए तो जैसे रूह मर गई,
फूल जब खिले तो गंधहीन हो गए।
सच कहा गया मगर सुना नहीं गया,
झूठ गढ़ने वाले नामचीन हो गए।
बस्तियों का हाल भी तो देखिये कभी,
माल, हाइवे तो बेहतरीन हो गए।
इस चमक-दमक में मेरा देश बिक गया,
दृश्य तो हरे भरे हसीन हो गए।
सारहीन हो गए हैं भाव और कथ्य,
पुस्तकों के पाठ तो नवीन हो गए।
संविधान भी वही है तंत्र भी वही,
मानवीय स्वर कहाँ विलीन हो गए।

- अशोक रावत

अहमदाबाद में बाढ़ जैसे हालात

घर-ऑफिस में पानी भरा

● अहमदाबाद-मुंबई हाईवे पर 15 किमी लंबा जाम, सूरत में गर्भवती का रेस्क्यू ● हिमाचल में 24 घंटे में 5 जगह बादल फटा ● 2 हजार टूरिस्ट फंसे, डैम से पानी छोड़ने का अलर्ट

नई दिल्ली/ अहमदाबाद/ हिमाचल/भोपाल/ लखनऊ (एजेंसी)। गुजरात के अहमदाबाद में पिछले 12 घंटे से तेज बारिश हो रही है। इससे अहमदाबाद शहर में बाढ़ जैसे हालात हैं। वहीं हिमाचल प्रदेश में कुल्लु जिले में पिछले 24 घंटों में जीवा नाला (सैंज), शिलागढ़ (गढ़सा) घाटी, स्त्रो गैलरी (मनाली), होरनगढ़ (बंजार), कांगड़ा और धर्मशाला के खनियारा में बादल फटा। इसके चलते अचानक आई बाढ़ में 9 से ज्यादा लोग लापता हो गए थे। इसके बाद चले रेस्क्यू ऑपरेशन में 4 लोगों के शव बरामद हो चुके हैं। धर्मशाला के खनियारा से लापता एक मजदूर को आज सुबह सुरक्षित रेस्क्यू किया गया।

वहीं, कुल्लू में 2 हजार टूरिस्ट फंसे हैं। डैम से पानी छोड़ने का अलर्ट जारी किया गया है। इधर, राजस्थान में मानसून की बारिश जारी है। बांसवाड़ा में एक दिन में सबसे ज्यादा 8 इंच पारी बरसा।

गुजरात के अहमदाबाद में पिछले 12 घंटे से तेज बारिश हो रही है। इससे अहमदाबाद शहर में बाढ़ जैसे हालात हैं। पूर्वी क्षेत्र के मणिनगर, वटवा, सिटीएम, हाटकेश्वर, निकोल ओधव और विराट नगर समेत कई इलाकों में पानी भर गया। बारिश के पानी के बहाव में एक बाइक सवार ड्रेनेज लाइन में फंस गया।

ओडिशा के संभलपुर में भारी बारिश - ओडिशा में संभलपुर शहर के कई हिस्सों में भारी बारिश हो रही है। इससे यहां सामान्य जीवन पर असर पड़ा है।

केरल में तेज बारिश, 3 जिलों में रेड अलर्ट; होर्डिंग्स, पेड़ गिरे - गुरुवार को केरल में मानसूनी बारिश तेज हो गई। एर्नाकुलम, इडुक्की और त्रिशूर जिलों के कुछ निचले इलाकों में बाढ़ की स्थिति बन गई।

अहमदाबाद-मुंबई हाईवे पर 15 किमी लंबा जाम - मानसून देश के ज्यादातर हिस्सों को कवर कर चुका है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, गुजरात में बारिश के चलते बाढ़ जैसे हालात हैं। सूरत के गीतानगर इलाका 3 से 4 फीट पानी में डूबा हुआ है। यहां तबीयत बिगड़ने के बाद एक गर्भवती महिला का फायर बिग्रेड टीम ने रेस्क्यू किया और अस्पताल पहुंचाया।

नवसारी में बाढ़ में डूबा प्राइमरी स्कूल- गुजरात के नवसारी में रात भर हुई लगातार बारिश के कारण चिखली तालुका के अमधरा गांव में बाढ़ आ गई। जिसके चलते प्राइमरी स्कूल में पानी भर गया। स्कूल का फर्नीचर और ब्लैकबोर्ड पानी में डूब गया।

मुख्यमंत्री निवास पर हुआ लोकतंत्र सेनानियों का प्रादेशिक सम्मेलन

लोकतंत्र हमारी जीवन शैली की आत्मा है : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि लोकतंत्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह केवल एक शासन प्रणाली नहीं, बल्कि हमारी जीवनशैली की आत्मा और पहचान है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र भारतीय जनमानस में पुराकाल से रचा-बसा है और इसकी जड़ें हमारी परंपराओं में गहराई तक फैली हुई हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास में लोकतंत्र सेनानियों के प्रादेशिक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने लोकतंत्र की मजबूती में लोकतंत्र सेनानियों के अमूल्य योगदान की सराहना करते हुए कहा कि हमारा वर्तमान लोकतंत्र उनके अनथक संघर्ष और बलिदान का ही परिणाम है। आज हम एक मजबूत और जवाबदेह लोकतांत्रिक व्यवस्था में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इसके मूल में लोकतंत्र सेनानी ही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लोकतंत्र शासन को जवाबदेह बनाता है, नागरिकों को अधिकार देता है और प्रत्येक व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है। लोकतांत्रिक प्रणाली ही हमारी विविधता में एकता को बनाए रखने का आधार है।

- **70 प्लस मीसाबंदियों, फ्रीडम फाइटर्स को मिलेंगे आयुष्मान कार्ड**
- **सीएम हाउस में ताम्रपत्र से कर्नाटक के राज्यपाल और पूर्व गवर्नर सोलंकी का हुआ सम्मान**

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी का आह्वान किया कि लोकतंत्र की इस विरासत को आगे बढ़ाना हम सबका नैतिक दायित्व है। उन्होंने कहा कि हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। दुनिया हमारी ओर हैरत से देखती है कि यहां लोकतंत्र की जड़ें कितनी गहरी हैं। भारत देश सच्चे अर्थों में लोकतंत्र का जनक है। उन्होंने कहा कि हम सब लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाने वाली विरोधी ताकतों से मिलकर लड़ेंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने लोकतंत्र सेनानियों के हित में घोषणा करते हुए कहा कि अब 70 साल से अधिक आयु के सभी लोकतंत्र सेनानियों को आयुष्मान कार्ड के माध्यम से निःशुल्क इलाज और आवश्यकता पड़ने पर पीएम एयर एम्बुलेंस की सुविधा भी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने वर्ष 2025 को रोजगार एवं उद्योग वर्ष के रूप में मनाने का फैसला किया है। प्रदेशवासियों के जीवन में उजाला लाने के लिए सरकार नित नई योजनाएं लेकर आ रही हैं। पात्र होने पर लोकतंत्र सेनानियों के परिजनों को भी इन सभी शासकीय योजनाओं में प्राथमिकता के अनुरूप लाभ दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार लोकतंत्र सेनानियों और उनके परिजन के कल्याण के लिए कोई कसर नहीं रखेगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव, कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत एवं अन्य अतिथियों ने 'मीसा पत्रिका' और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आपातकाल के दौरान लिखे गए पत्रों, विचारों, आलेखों से जुड़े संस्मरणों पर आधारित एक 'इमरजेंसी डायरी' का भी विमोचन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कर्नाटक के राज्यपाल श्री गहलोत, हरियाणा के पूर्व राज्यपाल श्री कप्तान सिंह सोलंकी, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट और म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी के अध्यक्ष श्री अशोक कड़ेल को लोकतंत्र सेनानी होने के सम्मान स्वरूप ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रभारी मंत्री अपने-अपने प्रभार के जिलों में सभी लोकतंत्र सेनानियों को ताम्रपत्र देकर सम्मानित करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केंद्र सरकार ने 25 जून को संविधान हत्या दिवस घोषित किया है। आज 26 जून को लोकतंत्र सेनानी प्रादेशिक सम्मेलन हो रहा है। आपातकाल के दौर में लोकतंत्र सेनानियों की क्या चुनौतियां थी, ये मुझे बचपन में समझने का मौका मिला। एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने अपना शासन बरकरार रखने के लिए देश पर आपातकाल लगा दिया था। उस आपातकाल की देश ने बड़ी कीमत चुकाई। लोकतंत्र को बचाने के लिए तत्कालीन लोकतंत्र सेनानियों का संघर्ष पूरा देश याद रखेगा।तत्समय कांग्रेस सरकार ने चुनी हुई सरकारों को भंग करने का कार्य किया था। कांग्रेस शासनकाल में इन्हीं के एक वरिष्ठ नेता ने अध्यादेश की कॉपी फाड़कर चुनी हुई सरकार और संविधान का अपमान किया था।

शुभांशु 28 घंटे सफर करके इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुंचे

आईएसएस पर पहुंचने वाले पहले भारतीय, 14 दिन तक रिसर्च करेंगे

फ्लोरिडा (एजेंसी)। भारतीय एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला सहित चारों एस्ट्रोनॉट आज यानी, 26 जून को शाम 4:00 बजे इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुंच गए। करीब 28 घंटे के सफर के बाद वे आईएसएस पहुंचे हैं। इससे पहले मिशन क्रू ने स्पेसक्राफ्ट से लाइव बातचीत की। इसमें शुभांशु ने कहा था- नमस्कार फ्रॉम स्पेस! मैं अपने साथी अंतरिक्ष यात्रियों के साथ यहां होने के लिए बहुत एक्साइटेड हूं।

उन्होंने कहा- जब हमें वैक्यूम में लॉन्च किया गया, तब मैं बहुत अच्छा महसूस नहीं कर रहा था। मैं बहुत सोया हूं। यहां एक बच्चे की तरह सीख रहा हूं... अंतरिक्ष में चलना और खाना कैसे है।

आज से शुरू होगी भव्य जगन्नाथ रथ यात्रा

● भगवान जगन्नाथ भाई-बहन संग रथ पर होंगे सवार ● यह यात्रा 12 दिनों तक चलेगी, भगवान तीनों रथों पर सवार होकर गुंडिचा मंदिर जाएंगे

पुरी (एजेंसी)। ओडिशा के पुरी में आज (27 जून) रथयात्रा है। भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के रथ तैयार हो चुके हैं। हर साल 45 फीट ऊंचे तीनों रथ 200 से ज्यादा लोग सिर्फ 58 दिनों में तैयार करते हैं। ये रथ 5 तरह की खास लकड़ियों से पूरी तरह हाथों से बनाए जाते हैं। लकड़ियां मापने के लिए किसी स्केल का इस्तेमाल नहीं होता, बल्कि एक छड़ी से ही माप कर 45 फीट ऊंचे और 200 टन से ज्यादा वजनी रथ तैयार किए जाते हैं।

हर साल नए रथ बनते हैं। इनकी शुरुआत अक्षय तृतीया से हो जाती है और गुंडिचा यात्रा के दो दिन पहले रथ बन कर तैयार हो जाते हैं। यात्रा खत्म होने के बाद रथों को तोड़ दिया जाता है। आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि अत्यंत खास मानी जाती है क्योंकि इसी दिन भगवान जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा का शुभारंभ होता है। यह आयोजन न केवल पुरी, बल्कि पूरे देश और विदेशों से लाखों भक्तों को आकर्षित करता है। इस वर्ष जगन्नाथ रथ यात्रा 27 जून, शुक्रवार से शुरू होकर 8 जुलाई तक चलेगी।

- **धार्मिक महत्व और पुण्य की मान्यता**- जगन्नाथ रथ यात्रा का आशीर्वाद मिलता है '100 यज्ञों जितना पुण्य' प्राप्त करने का अवसर, ऐसी आस्था है कि जो व्यक्ति रथ खींचता है या उसमें घूमता है, उसे पाप-मुक्त होने का अधिकार मिलता है। यही वजह है कि पुरी में दुनिया भर से लाखों श्रद्धालु इस आयोजन में भाग लेने आते हैं।
- **आस्था, संस्कृति और विविधता का संगम**- यह यात्रा सिर्फ एक उत्सव नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति की सशक्त परंपरा, वैश्विक सामूहिक भक्ति और धार्मिक समरसता की जीवंत मिसाल है।

हर साल पुरी रथयात्रा के दौरान श्रद्धालु अपने भीतर आध्यात्मिक उन्नति का अनुभव करते हैं। इस बार भी पुरी नगर, तेजस्वी रथों, भक्तों की आस्था, और अनुष्ठानों की रौनक से जगमगा उठा है।

रथ यात्रा का प्रारंभ

इस दिन भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ तीन अलग-अलग विशाल रथों पर सवार होकर 'मौसी के घर' कहलाने वाले गुंडिचा मंदिर की ओर रवानगी करते हैं। भगवान जगन्नाथ नंदीघोष नामक रथ पर सवार होते हैं, बलभद्र तालध्वज नामक रथ पर और सुभद्रा दर्पदलन नामक रथ पर विराजमान होती हैं। इन विशाल और भव्य रथों को भारी रस्सियों से लाखों भक्त मिलकर खींचते हैं। पंडाल के नीचे पुरी के राजा 'छेरा पन्हारा' नामक रस्म निभाते हैं, जिसमें वे सोने के झाड़ू से रथ के चबूतरे को साफ करते हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 41 °c | न्यूनतम 35°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 27 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

345 राजनीतिक दल कहां गायब हो गए?

चुनाव आयोग को नहीं मिला इनका कोई दफ्तर या ठिकाना, अब शुरू होगी ये कार्रवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने 345 राजनीतिक दलों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई शुरू की है। ये पार्टियां सिर्फ नाम की थीं, वह कागजों के अलावा कहीं दिखाई नहीं दे रही थीं। आयोग ने इन पार्टियों को अपनी लिस्ट से हटाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। उनका कहना है कि इन पार्टियों के दफ्तर कहीं नहीं मिले। चुनाव आयोग के अनुसार, कई पार्टियां सिर्फ कागजों पर चल रही हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और चुनाव आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ विवेक जोशी ने मिलकर यह फैसला लिया है। पिछले छह सालों में इन 345 'रजिस्टर्ड गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल' ने एक भी चुनाव नहीं लड़ा है। इनके दफ्तर भी कहीं नहीं मिले। इसलिए, आयोग ने इन्हें हटाने का फैसला किया है। आयोग ने एक प्रेस रिलीज में यह जानकारी दी। ये 345 पार्टियां देश के अलग-अलग राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से हैं।

चुनाव आयोग को सिर्फ कागज पर मिलीं 345 पार्टियां- चुनाव आयोग के रिकॉर्ड में 2,800 से ज्यादा रजिस्टर्ड गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल हैं। आयोग ने देखा कि इनमें से कई पार्टियां जरूरी नियमों को पूरा नहीं कर रही हैं। एक आरयूपीपी बने रहने के लिए कुछ शर्तें होती हैं, जिन्हें पूरा करना जरूरी है। लेकिन, कई पार्टियां इन शर्तों को पूरा नहीं कर पाईं।

सभी संदिग्ध पार्टियों को जवाब का मौका दिया जाएगा- चुनाव आयोग यह सुनिश्चित करना चाहता है कि किसी भी पार्टी को गलत तरीके से न हटाया जाए। इसलिए, सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य चुनाव अधिकारियों को कहा गया है कि वे इन पार्टियों को नोटिस भेजें। नोटिस में उनसे पूछा जाएगा कि उन्हें क्यों न हटाया जाए। आयोग ने कहा है कि नोटिस मिलने के बाद इन पार्टियों को अपनी बात रखने का मौका मिलेगा। सीईओ इन पार्टियों की बात सुनेंगे। इसके बाद, चुनाव आयोग यह तय करेगा कि किस पार्टी को हटाना है और किसे नहीं। चुनाव आयोग का कहना है कि इन पार्टियों को संबंधित सीईओ द्वारा सुनवाई के माध्यम से एक अवसर दिया जाएगा।

कांग्रेस बोली- चुनाव आयोग वोटर्स लिस्ट की डिजिटल कॉपी दें

- महाराष्ट्र चुनाव में फिक्सिंग के आरोप पर ईसी ने राहुल गांधी को चर्चा के लिए बुलाया था

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र चुनाव 2024 में गड़बड़ी के आरोपों को लेकर कांग्रेस ने इलेक्शन कमीशन को लेटर लिखा है। पार्टी ने आयोग से एक हफ्ते में महाराष्ट्र चुनाव की डिजिटल वोटर्स लिस्ट मांगी है। साथ ही महाराष्ट्र और हरियाणा के वोटिंग डे की वीडियो फुटेज देने को कहा है।

पार्टी ने कहा कि यह पुरानी मांग है और आयोग इसे आसानी से दे सकता है। डेटा मिलने पर वे अपना एनालिसिस करेंगे और चुनाव आयोग से चर्चा करेंगे।

दरअसल, 12 जून को इलेक्शन कमीशन (ईसी) ने राहुल को लेटर लिखा था। इसमें राहुल को विधानसभा चुनाव में धांधली के उनके आरोपों पर चर्चा के लिए बुलाया गया था। इसी के जवाब में कांग्रेस ने आयोग को लेटर लिखा है।

चुनाव आयोग ने कहा था- देश में चुनाव पारदर्शी होते- ईसी ने 12 जून को राहुल को भेजे लेटर में लिखा था कि भारत की संसद के पारित इलेक्टोरल लॉ, उसके नियमों और समय-समय पर चुनाव आयोग के निर्देशों के जरिए बहुत सख्ती से देश में चुनाव आयोजित कराए जाते हैं। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव प्रक्रिया विधानसभा क्षेत्र स्तर पर सेंट्रलाइज्ड आयोजित की जाती है।

बाइक-स्कूटर पहले की तरह टोल फ्री रहेंगे

मीडिया रिपोर्ट्स में 15 जुलाई से टैक्स लगाने की बात कही थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। बाइक-स्कूटर चलाने वालों को हाईवे पर किसी भी तरह का टोल टैक्स नहीं देना होगा। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा था कि 15 जुलाई से नेशनल हाईवे पर टू-व्हीलर चलाने वालों को भी टैक्स देना होगा।

इन खबरों को सरकार ने फेक बताया है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने कहा- टू-व्हीलर चलाने वालों को पहले की तरह ही टोल टैक्स से छूट मिलती रहेगी। कुछ रिपोर्टों में ये भी दावा किया गया था कि बाइक और स्कूटर वालों को फास्टटैग लगवाना होगा और अगर नियम तोड़ा तो 2000 रुपए तक का जुर्माना देना पड़ सकता है। कुछ में कहा गया कि हर महीने 150 रुपए की टोल फीस देनी होगी। लेकिन, इन खबरों में कोई आधिकारिक गजट नोटिफिकेशन या सरकारी बयान का जिक्र नहीं था।

प्राकृतिक और रासायनिक फसलों के उपार्जन के लिए मंडियों में होगी पृथक व्यवस्था : मुख्यमंत्री

प्राकृतिक खेती जीवन के लिए वरदान है : राज्यपाल आचार्य देवव्रत

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'प्राकृतिक खेती के नाम एक चौपाल' कार्यक्रम को अद्भुत व प्रेरणादायी बताते हुए कहा कि जिस प्रकार नमस्कार का असली महत्व कोविड के बाद समक्ष आया, ठीक इसी प्रकार प्राकृतिक खेती का विचार रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बाद आ रहा है। उन्होंने कहा कि मैंने स्वयं खेती की है, जिसमें रासायनिक खादों के उपयोग की आदत नहीं थी पश्चिम आधारित सोच के कारण कृषि में रासायनिक खाद का उपयोग बढ़ा। भारतीय ज्ञान के प्रति बढ़ते रूझान को देखते हुए गौ-पालन के लिए गौशाला बनाये जा रहे हैं, जिसके उत्पाद से प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में प्राकृतिक खेती की बड़ी संभावना है। उन्होंने कृषि मंत्री से कहा कि प्राकृतिक खेती के प्रोत्साहन के लिए योजनाएं बनायें, वे निश्चित रूप से इसे लागू करेंगे। मुख्यमंत्री ने प्राकृतिक खेती और रासायनिक खेती से उत्पादित फसलों के उपार्जन के लिए मंडियों में दो तरह की व्यवस्था करने को कहा, जिससे उत्पादित फसलों के उपभोग में कठिनाई न आये। मुख्यमंत्री गुरूवार को जबलपुर के मानस भवन में चौपाल प्राकृतिक खेती के नाम कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में दुग्ध उत्पादन अभी 9 प्रतिशत है, इसे 25 प्रतिशत तक ले जायेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि फैट के आधार पर दूध खरीदने की व्यवस्था है। भैंस के दूध को अधिक लाभदायक बताकर देशी गाय के दूध को महत्वहीन बताने का षडयंत्र रचा गया। उन्होंने गाय के दूध के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्राकृतिक खेती के नाम एक चौपाल कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत का हार्दिक स्वागत व आभार व्यक्त किया और कहा कि आचार्य देवव्रत ने अत्यंत सरलता से प्राकृतिक खेती के विषय को समझाया है। प्राकृतिक खेती के लिए गाय के गोबर से बने जीवामृत का उपयोग कर कृषि उत्पाद को बढ़ाकर धरती के स्वास्थ्य को भी सुरक्षित किया जा सकता है।

गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत ने 'प्राकृतिक खेती के नाम एक चौपाल' में प्राकृतिक खेती के अनुभव साझा करते हुए कहा कि रासायनिक खेती के दुष्परिणामों को देखते हुए उन्होंने सबसे पहले 5 एकड़ भूमि पर प्राकृतिक खेती शुरू की थी। जिसमें प्रथम वर्ष की तुलना में गुणात्मक रूप से ज्यादा फसल की पैदावार प्राप्त हुई वे लगातार प्राकृतिक खेती कर रहे हैं बल्कि बेहतर उत्पादन भी प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बारे में विस्तार से बताकर प्राकृतिक खेती अपनाने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती में अंतर भी बताया।

राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत ने कहा कि जिस प्रकार जंगल में बिना खाद पानी दिये जंगली पेड़ भरपूर फसल देते हैं, उसी प्रकार का नियम प्राकृतिक खेती में भी लागू होता है। प्रकृति अपने इकोसिस्टम से हर चीज को नियंत्रित कर अपने मूल स्वरूप में ला देती है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं होते। प्राकृतिक खेती जीवन के लिए वरदान है। फसल के नाम पर रासायनिक खादों का उपयोग बंद करें, क्योंकि इससे कृषि मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं। जिससे धरती की उर्वराशक्ति प्रभावित होती है। उन्होंने रासायनिक खादों के दुष्परिणाम के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने सभी किसानों से कहा कि रासायनिक खेती हानिकारक है और किसान प्राकृतिक खेती अपनायें और प्रकृति से जुड़े। राज्यपाल श्री आचार्य ने मंत्री श्री राकेश सिंह के विशेष प्रयासों से आयोजित 'प्राकृतिक खेती के नाम एक चौपाल' कार्यक्रम की सराहना की।

लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने कहा कि प्राकृतिक खेती के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति अन्नदाताओं के प्रति एक प्रतिबद्धता है।

- सीएम भजनलाल बोले

पंजा मत दिखाइए, इसने तो देश को गंजा कर दिया

जयपुर। जोधपुर में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने छात्र-छात्राओं से कहा कि यहां से जाओगे तो मिर्ची बड़े को नहीं भूल पाओगे। इस पर हॉल में बैठे लोग हंस पड़े और तालियां बजाई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ग्राम दईजर में पं. दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत आयोजित समारोह में शामिल हुए।

यहां जयश्री राम के नारे लगाए तो कई लोगों ने हाथ दिखाया। इस पर सीएम ने चुटकी लेते हुए कहा पंजा मत दिखाइए, हनुमानजी की मुष्ठिका दिखाओ। इस पंजे ने तो देश को गंजा कर दिया।

जोधपुर-नागौर रोड पर स्थित आईआईटी में आयोजित 11वें दीक्षांत समारोह में मुख्यमंत्री ने छात्र-छात्राओं को विभिन्न विषयों में डिग्री प्रदान की। इस अवसर पर आईआईटी जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल ने संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों, नई पहलों और भविष्य की योजनाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला।

कर्ज में डूबे पूरे परिवार ने लगाया मौत को गले, सभी लोगों ने खा लिया जहर

बिजनौर (एजेंसी)। बिजनौर जिले के नूरपुर इलाके के टण्डेरा गांव में कर्ज से परेशान एक परिवार ने एक साथ जान देने की कोशिश की। गांव के पुखराज सिंह ने अपनी पत्नी रमेशिया और दो बेटियों के साथ घर में रखी सल्फास की गोलियां खा लीं। यह घटना सुबह की है, जब पुखराज का बेटा मजदूरी के लिए घर से निकल गया था। घर में कोई और सदस्य नहीं था, इसलिए कुछ देर बाद पड़ोसियों को शक हुआ और उन्होंने पुलिस को बताया।

पुलिस की 112 पीआरबी टीम तुरंत मौके पर पहुँची और सभी को नूरपुर के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गई। वहाँ से हालत गंभीर होने पर उन्हें बिजनौर मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। दुखद बात यह है कि इलाज के दौरान रमेशिया (पत्नी) और 19 साल की बेटी अनीता की मौत हो गई। पुखराज और उनकी दूसरी बेटी सीतो की हालत अभी भी गंभीर है और उन्हें मेरठ रेफर किया गया है।

पुलिस अधीक्षक अभिषेक झा ने अस्पताल पहुँचकर मामले की जानकारी ली। उन्होंने बताया कि शुरुआती जांच से पता चला है कि पुखराज ने गाँव के 25-30 लोगों से करीब छह लाख रुपये कर्ज लिया था। वह यह कर्ज चुका नहीं पा रहे थे, और इसी तनाव के चलते उन्होंने यह कदम उठाया। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है और यह भी देख रही है कि क्या कर्ज किसी समूह से लिया गया था और परिवार पर कोई दबाव था।

उधमपुर में एनकाउंटर, 1 आतंकी मारा गया

- 4 आतंकियों का ग्रुप पिछले साल से इलाके में छिपा

उधमपुर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में बसंतगढ़ इलाके में गुरुवार सुबह से जारी एनकाउंटर में एक आतंकी मारा गया है। इलाके में तीन और आतंकियों के छिपे होने की आशंका है। सेना और पुलिस का सर्च ऑपरेशन जारी है।

आईजीपी जम्मू जोन भीम सेन ने बताया कि बसंतगढ़ के बिहाली इलाके में पिछले एक साल से 4 आतंकियों के छिपे होने की खबर थी। गुरुवार सुबह साढ़े 8 बजे इनकी जानकारी मिलने के बाद सर्च ऑपरेशन चलाया गया। इस दौरान आतंकियों ने सिक्योरिटी फोर्सेज के जवानों पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में एक आतंकी मारा गया है। सोर्स के अनुसार, इलाके में 3 और आतंकी हैं। दोनों तरफ से फायरिंग जारी है।

थरूर पर कांग्रेस सांसद बोले-परिंदे को आसमान देखना पड़ता है

- शिकारी हर वक्त शिकार की तलाश में

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी की तारीफ के बाद कांग्रेस नेता शशि थरूर की अपनी ही पार्टी के साथ मतभेद की स्थिति बन रही है। अब तमिलनाडु के विरुधुनगर से कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने थरूर के आजाद पक्षी वाले पोस्ट पर तंज कसा है। टैगोर ने 'एक्स' पर शिकारी पक्षी (बर्ड्स ऑफ प्रे) पोस्टर के साथ लिखा- आज के समय में एक आजाद परिंदे को भी उड़ने से पहले आसमान देखना पड़ता है।

- शंघाई सहयोग संगठन की एससीओ की बैठक में राजनाथ की दो टूक

आतंकवाद पर दोहरा मापदंड के लिए कोई जगह नहीं

पाकिस्तानी रक्षा मंत्री से नहीं मिले और साझा दस्तावेज पर साइन करने से किया इनकार

शंघाई (एजेंसी)। चीन के किंगदाओ में हुई शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के रक्षा मंत्रियों की बैठक में भारत ने जॉइंट स्टेटमेंट पर साइन करने से इनकार कर दिया है। गुरुवार को हुई इस बैठक भारत की तरफ से रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने हिस्सा लिया।

जॉइंट स्टेटमेंट में पहलगाम में हुए आतंकी हमले को शामिल नहीं किया गया था, जबकि बलूचिस्तान में हुई घटना इसमें शामिल थी। भारत ने इससे नाराजगी जाहिर करते हुए स्टेटमेंट पर साइन नहीं किए।

बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, पहलगाम आतंकी हमले का पैटर्न भारत में लश्कर-ए-तैयबा के पिछले आतंकी हमलों जैसा था। सीमा पार से होने वाले आतंकी हमलों को रोकने के अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए भारत ने 7 मई 2025 को ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया।

कुछ देश सीमा पार आतंकवाद को अपनी नीति मानते हैं और आतंकवादियों को पनाह देते हैं। फिर इसे इनकार करते हैं। ऐसे डबल स्टैंडर्ड के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। उन्हें समझना होगा कि अब आतंकवाद के एपिसेंटर सेफ नहीं हैं। राजनाथ ने कहा, एससीओ को ऐसे देशों की आलोचना करने में संकोच नहीं करना चाहिए। इस बैठक में पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ भी मौजूद थे। दूसरी तरफ राजनाथ सिंह ने बैठक में पाकिस्तान के रक्षामंत्री ख्वाजा आसिफ से भी मुलाकात नहीं की है।

रुद्रप्रयाग में नदी में ट्रैवलर गिरी

9 लापता, 3 की मौत और 8 घायल

रुद्रप्रयाग (एजेंसी)। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में अलकनंदा नदी में ट्रैवलर गिर गई। हादसा घोलतीर में बद्रीनाथ हाईवे पर हुआ। ट्रैवलर में 20 लोग सवार थे, इनमें से 3 की मौत हो गई है, जबकि 8 घायल हैं। वहीं, 9 लोग अभी भी लापता हैं। ट्रैवलर में राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के यात्री बैठे थे।

अमिताभ की आवाज वाली कॉलर ट्यून बंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोई भी अनजान व्यक्ति अगर आपके बैंक खाते, ओटीपी-केबायसी या अन्य निजी जानकारी मांगता है, तो उसे बिल्कुल न दें। हर फोन के पहले 40 सेकेंड तक सुनाई देने वाले अमिताभ बच्चन की आवाज के वॉयस मैसेज सरकार ने बंद कर दिया है।

सितंबर 2024 में साइबर फ्रॉड के प्रति जागरूक करने के लिए इसे शुरू किया गया था। लेकिन इमरजेंसी कॉलिंग के दौरान लोग इससे परेशान हो गए थे। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी इसी हफ्ते इंदौर में कहा था- मैं भी इससे परेशान हो गया हूं।

तेलंगाना में महिला ने रेलवे ट्रैक पर कार चलाई

- कई पुलिस और रेल कर्मचारियों ने मिलकर रोका; 15 ट्रेनें रोकीं या डायवर्ट की गईं

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के रंगा रेड्डी जिले में एक 34 साल की महिला ने अपनी कार को रेलवे ट्रैक पर दौड़ा दिया। इसके चलते वहां मौजूद कर्मचारियों में हड़कंप मच गया। 10-15 ट्रेनें रोकी या डायवर्ट करनी पड़ीं। शंकरपल्ली के पास हुई इस घटना के कुछ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। 13 सेकेंड के वीडियो में दिख रहा है कि महिला किआ सोनेट कार को रेलवे ट्रैक पर चला रही है। दूसरे वीडियो में स्थानीय लोग, रेलवे कर्मचारी और पुलिस मिलकर महिला को कार से बाहर निकालने की कोशिश करते दिखते हैं। भीड़ उसे कार से बाहर निकालने के बाद उसके हाथ बांध देती है। घटना को लेकर जांच जारी है कि महिला ने ऐसा क्यों किया और उसकी मानसिक स्थिति कैसी थी।

पद्मश्री सुरेंद्र दुबे का निधन... हार्ट-अटैक की आशंका

- कविताओं से दुनियाभर में थे मशहूर, अपनी मौत की अफवाह पर हंसाते हुए कहते थे-टाइगर अभी जिंदा है

रायपुर (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर हास्य कवि पद्मश्री डॉ. सुरेंद्र दुबे का गुरुवार को निधन हो गया। खबर है कि उन्हें हार्ट अटैक आया है। रायपुर के एडवांस कार्डियक इंस्टीट्यूट में उनका इलाज चल रहा था। दुबे के परिवार के करीबी भाजपा नेता उज्ज्वल दीपक ने सोशल मीडिया पर उनके निधन की जानकारी दी है।

डॉ. सुरेंद्र दुबे के निधन पर कवि कुमार विश्वास, राज्यपाल रामेन डेका, सीएम विष्णुदेव साय, गृहमंत्री विजय शर्मा, वन मंत्री केदार कश्यप, पूर्व सीएम भूपेश बघेल और मीर अली मीर समेत कई बड़ी हस्तियों ने दुख जताया है। लिखा पूरे परिवार को ईश्वर इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। ओम शांति।

लोकतंत्र पर गहरा आघात था आपातकाल: मुख्यमंत्री

बीते 18 माह की सरकार की उपलब्धियों पर मीडिया संवाद कार्यक्रम में की चर्चा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 25 जून 1975 की मध्य रात्रि से लागू हुआ आपातकाल हमारे लोकतंत्र पर एक गहरा आघात था। वो संविधान और लोकतंत्र की हत्या थी। वो देश के लोकतंत्र का एक ऐसा काला अध्याय था, जिसे देश कभी नहीं भूल पाएगा। नई पीढ़ी को उस दौर में हुई तानाशाही के बारे में बताना जरूरी है और यही कारण है कि केन्द्र सरकार के निर्देशानुसार हम सभी 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में याद कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को एक निजी मीडिया समूह द्वारा आयोजित 'देश के दिल की बात' नामक संवाद कार्यक्रम में सहभागिता कर संबोधित कर रहे थे।

संवाद कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बीते 18 माह में जनकल्याणकारी योजनाओं और नवाचारों के जरिए राज्य सरकार द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि हम मध्यप्रदेश को आर्थिक रूप से सम्पन्न बना रहे हैं। मध्यप्रदेश की आत्मनिर्भरता देखिए कि दिल्ली मेट्रो हमारी बिजली से चल रही है। वर्ष 2025-26 में राज्य की प्रति व्यक्ति आय 1.55 लाख रूपए के करीब पहुंची है। वर्ष 2002-03 में यह मात्र 11 हजार रूपए थी। हम अगले दो सालों में प्रदेश के 50 जिलों में मेडिकल कॉलेज खोल देने के लक्ष्य के प्रति संकल्पित होकर आगे बढ़ रहे हैं। हम विरासत से विकास की ओर बढ़ रहे हैं। देश का मान बढ़ाने वाले वीरों और अमर शहीदों के नाम पर योजनाओं के अलावा हमारी सरकार

ने गोंडवाना की महारानी दुर्गावती, होल्कर स्टेट की महान प्रशासिका लोकमाता देवी अहिल्या बाई और नर्मदांचल के राजा भभूत सिंह की स्मृति में केबिनेट करके उन्हें समुचित सम्मानदिया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि बहुत जल्द हमारी सरकार भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की पुण्य स्मृति में केबिनेट मीटिंग करने जा रहे हैं।

हमारा एकमात्र प्रदेश है जो गरीब मेडिकल विद्यार्थियों की फीस सरकार भर रही है

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश का एकमात्र प्रदेश है जिसमें मेडिकल की शिक्षा ग्रहण कर रहे गरीब वर्ग के विद्यार्थियों की फीस सरकार भर रही है और हमारी सरकार ने इन होनहार बच्चों से केवल इतना वादा लिया है कि वे डॉक्टर बनने के बाद प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में अपनी सेवाएं देंगे। इससे सरकार के तीन लक्ष्य पूरे हो रहे हैं। पहला हम समाज के गरीब तबके को उच्च शिक्षा पाने की सुविधा दे रहे हैं। दूसरा गरीब विद्यार्थियों को फीस की चिंता से मुक्त कर रहे हैं और तीसरा सबसे जरूरी प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित कर स्वास्थ्य सुविधाओं और सेवाओं में भी सुधार लो रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने तय किया है कि प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों में यदि किसी मरीज को तत्काल उच्च स्वास्थ्य संस्था तक पहुंचाने की आवश्यकता हुई, तो यदि वहां समीप ही एयरपोर्ट या हवाई पट्टी है तो पीएम एयर एम्बूलेंस सेवा और यदि हवाई पट्टी नहीं है तो हेलीकॉप्टर सेवा के जरिए उस मरीज को यथासमय हायर हेल्थ सेंटर तक पहुंचाया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के जरिए सामाजिक असमानता को दूसर करने का प्रयास किया है। प्रदेश की एक लाख से अधिक लाड़ली बहनों को हम हर माह सहायता राशि दे रहे हैं। इससे उनकी क्रय शक्ति बढ़ी है। अब वे अपने खर्चों के लिए किसी पर आश्रित नहीं है। हमने महिला एवं बाल विकास विभाग का बजट भी बढ़ाया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल के बड़े तालाब के विकास पर भी हमारा जोर है। बहुत जल्द यहां 10 शिकारे चलेंगे। हमारी योजना यहां 20 शिकारे चलाने की है। इन शिकारो के जरिए डल झील की तरह जल पर्यटन के अलावा व्यापार-व्यवसाय भी हो, हमारी सरकार इस दिशा में भी काम कर रही है।

'एमपी राइज 2025'

रतलाम में औद्योगिक विकास और रोजगार का संगम आज

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में औद्योगिक विकास, कौशल उन्नयन और रोजगार सृजन को समर्पित रीजनल इंडस्ट्री, स्किल एंड इम्प्लॉयमेंट कॉन्क्लेव का भव्य आयोजन 27 जून को रतलाम में होने जा रहा है। यह आयोजन प्रदेश में रोजगार सृजन, उद्यमिता संवर्धन और आत्मनिर्भरता के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प की सिद्धि की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगा। 'एमपी राईज 2025' आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण को दिशा देगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव इस अवसर पर रतलाम में 'एमपी राइज 2025' कॉन्क्लेव का शुभारंभ करेंगे तथा रीवा, सागर, अलीराजपुर और पीथमपुर में रोजगारमूलक औद्योगिक इकाइयों का भूमि पूजन और लोकार्पण करेंगे। इस कॉन्क्लेव की थीम 'सफल उद्यमी, समृद्ध उद्योग, समावेशी विकास है।' सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग और तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग की सक्रिय भागीदारी रहेगी। कार्यक्रम का आयोजन औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन विभाग द्वारा किया जा रहा है।

पंचायत उप निर्वाचन के लिये मतदान 22 जुलाई को

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा पंचायत उप निर्वाचन वर्ष 2025 के लिये निर्वाचन कार्यक्रम घोषित कर दिया गया है। मतदान 22 जुलाई को होगा। सचिव राज्य निर्वाचन आयोग श्री अभिषेक सिंह ने बताया है कि निर्वाचन की सूचना का प्रकाशन तथा नाम निर्देशन पत्र प्राप्त करने का कार्य एक जुलाई से प्रारंभ होगा। नाम निर्देशन पत्र 8 जुलाई तक लिये जायेंगे। नाम निर्देशन पत्रों की जांच 9 जुलाई को होगी। अभ्यर्थिता से नाम वापस लेने की अंतिम तारीख 11 जुलाई है। इसी दिन निर्वाचन प्रतीकों का आवंटन किया जायेगा। मतदान 22 जुलाई को सुबह से 10 बजे से अपरान्ह 3 बजे तक होगा।

पंच पद के लिये मतदान केन्द्र पर ही मतदान समाप्ति के तुरंत बाद 22 जुलाई को ही मतगणना होगी। सरपंच एवं जनपद पंचायत सदस्य की विकासखंड मुख्यालय पर मतगणना होगी एवं परिणाम की घोषणा 26 जुलाई को सुबह 8 बजे से होगी। पंच पद की मतदान केन्द्र पर की गई मतगणना का सारणीकरण तथा निर्वाचन परिणाम की घोषणा 29 जुलाई को होगी। उप निर्वाचन में 3983 पंच, 64 सरपंच और 11 जनपद पंचायत सदस्यों के लिये मतदान होगा।

सभ्य-शिक्षित समाज में नशे का कोई स्थान नहीं : सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतरराष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस पर स्वस्थ एवं नशा मुक्त समाज बनाने का संकल्प लेने का आह्वान किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर कहा कि यह दिन समाज को सतर्क एवं जागरूक करता है कि नशा नाश की जड़ है। सभ्य, उन्नतशील व शिक्षित समाज में इसके लिए कोई स्थान नहीं है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों से कहा कि नशामुक्त समाज और प्रदेश को नशामुक्त बनाने के प्रयासों को गति देने में सभी सहयोग करें।

बीएलओ घर-घर दिव्यांग मतदाताओं का करेंगे सर्वे

भोपाल (नप्र)। बीएलओ द्वारा दिव्यांग मतदाताओं के घर-घर जाकर सर्वे किया जाएगा। इसके बाद मतदाता सूची में शामिल ऐसे दिव्यांग जो 40 फीसदी से अधिक दिव्यांग हैं। उन्हें डाक मत पत्र के जरिए मतदान की सुविधा दी जाएगी। इसके अलावा ऐसे मतदाताओं की सुविधा के लिए मतदान केंद्रों में सभी पर्याप्त इंतजाम किए जाएंगे।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश सुखवीर सिंह ने गुरुवार को राज्य स्टीयरिंग कमेटी ऑन एक्सेसिबल इलेक्शन कमेटी के सदस्यों के साथ बैठक की। इसमें छूटे हुए दिव्यांग मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जुड़वाए जाने के संबंध में

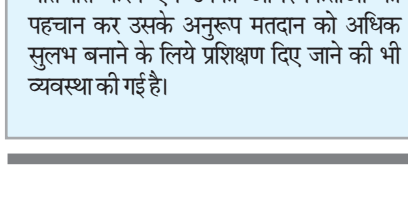

चर्चा की गई और कमेटी के सदस्यों से सुझाव भी लिए गए। बैठक के दौरान मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सिंह ने भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा और लोकसभा चुनावों के दौरान मतदाताओं को दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में अवगत कराया।

मोबाइल ऐप से अपडेट होगी दिव्यांगता की जानकारी- उन्होंने कहा कि दिव्यांग मतदाताओं के मताधिकार के दृष्टिगत आयोग द्वारा मतदान केन्द्रों में बुनियादी न्यूनतम सुविधाओं को सशक्त बनाया गया है। दिव्यांग मतदाताओं के लिए व्हील चेयर, रैंप, बड़े अक्षरों में साइनेज, टोकन सिस्टम, बैठने की सुगम व्यवस्था, पीने का पानी, दिव्यागजनों के लिए अनुकूल शौचालय इत्यादि की व्यवस्था गई है। दिव्यांगजन अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वा सकें, इसके लिए 'पीडब्ल्यूडी ऐप' की सुविधा प्रदान की गई है। यह मोबाइल एप्लीकेशन ऐप है। दिव्यांग मतदाता द्वारा वोटर हेल्पलाइन एप, एनवीएसपी पोर्टल के माध्यम से अपनी दिव्यांगता की स्थिति को अपडेट कर सकता है। दृष्टिहीन दिव्यांग मतदाताओं की सुविधा के लिए ब्रेल लिपि में मतदाता परिचय पत्र एवं मतपत्र की सुविधा प्रदान की गई है। चुनाव से पूर्व दिव्यांग मतदाताओं की सुविधा के लिए मतदान अधिकारियों, पुलिस कर्मियों और गैर सरकारी संगठनों इत्यादि को दिव्यागजनों से सम्मानपूर्वक बातचीत करने एवं उनकी आवश्यकताओं को पहचान कर उसके अनुरूप मतदान को अधिक सुलभ बनाने के लिये प्रशिक्षण दिए जाने की भी व्यवस्था की गई है।

राजा हत्याकांड- बिल्डिंग मालिक से सामना कराने पर टूटा कॉन्ट्रैक्टर

शिलोम ने कबूली पिस्टल फेंकने की बात, गार्ड समेत तीनों को लेकर शिलॉन्ग लौटी पुलिस

इंदौर (नप्र)। राजा रघुवंशी हत्याकांड की जांच कर रही मेघालय पुलिस इंदौर से शिलॉन्ग लौट गई। टीम यहां 9 दिन रही। शिलॉन्ग पुलिस अपने साथ उस बिल्डिंग के मालिक लोकेंद्र सिंह तोमर, ब्रोकर-कॉन्ट्रैक्टर शिलोम जेम्स और सिक्योरिटी गार्ड बलवीर अहिरवार को भी ले गई है, जिसके एक फ्लैट में सोनम रुकी थी।

इन तीनों का आरोपी विशाल चौहान और राज कुशवाह से सामना कराया जाएगा। इससे पहले बुधवार को पुलिस ने शिलोम जेम्स की निशानदेही पर इंदौर से पिस्टल, दो मैगजीन, दो कारतूस और 50 हजार रुपए बरामद किए। ये सारी चीजें सोनम के काले बैग में थीं। राजा की हत्या के बाद सोनम शिलॉन्ग से लौटकर इंदौर की जिस बिल्डिंग के

फ्लैट में रुकी थी, उसके मालिक लोकेंद्र तोमर को 23 जून को ग्वालियर से गिरफ्तार किया गया था। ये बिल्डिंग करीब चार महीने पहले शिलोम जेम्स ने किराये पर चलाने के लिए ली थी। बलवीर यहां गार्ड और कारपेंटर का काम करता था।

राजा के मर्डर की खबरें देखने-सुनने के बाद शिलोम को पता लगा कि विशाल ने जिस फ्लैट को किराये पर लिया था, उसमें सोनम रुकी थी। शिलोम ने यह बात लोकेंद्र को बताई। लोकेंद्र ने फ्लैट की तलाशी लेने के बाद बैग हटाने की बात कही। बाद में खुद इंदौर आया। बैग में रखे रुपए और पिस्तौल लेकर वापस चला गया। उसके कहने पर ही शिलोम ने सोनम का बैग जला दिया। पुलिस ने लोकेंद्र, शिलोम और बलवीर को सबूत मिटाने और उनसे छेड़छाड़ करने का आरोपी बनाया है।

लोकेंद्र-शिलोम का कराया आमना-सामना

ग्वालियर से बिल्डिंग मालिक लोकेंद्र सिंह तोमर को बुधवार सुबह इंदौर लाया गया। करीब 11 बजे लोकेंद्र और शिलोम का आमना-सामना कराया गया। लोकेंद्र ने पिस्टल अपने पास होने की बात से इनकार कर दिया। जबकि शिलोम ने स्वीकार कर लिया कि उसने ही इंडस्ट्री हाउस के नजदीक पिस्टल फेंकी थी।

इसके बाद शिलॉन्ग पुलिस उसे लेकर इंडस्ट्री हाउस के पीछे पहुंची। यहां करीब 3 घंटे की सर्चिंग के बाद एक थैली से पिस्टल बरामद कर ली गई। हालांकि, सोनम का लैपटॉप अभी भी नहीं मिला है। शिलोम ने पुलिस को बताया है कि उसने लैपटॉप भी यहीं फेंका था।

घर की तलाशी, लेकिन कार में मिले रुपए

लोकेंद्र ने शिलोम जेम्स से मिले अपने हिस्से के रुपए खर्च होने की बात कही। उसकी कार की तलाशी लेने पर एक डिक्की में करीब 50 हजार रुपए मिले हैं। जेम्स के परिवार के लोगों से भी पुलिस काफी देर तक बात करती रही।

भोपाल में स्कूल बसों पर आरटीओ की कार्रवाई

बिना परमिट-फिटनेस के चल रहीं 5 बसें जब्त 3 से वसूला गया 25 हजार जुर्माना

भोपाल (नप्र)। स्कूल बसों की अनियमितताओं को लेकर क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ) भोपाल ने एक बार फिर सख्त रुख अपनाया है। गुरुवार को नर्मदापुरम रोड पर विशेष चेकिंग अभियान के दौरान माउंट कार्मल और केएम कॉन्वेंट स्कूल समेत कई स्कूल बसों की जांच की गई। इस दौरान बिना परमिट और फिटनेस के दौड़ रही 5 बसें जब्त की गईं। ये सभी वाहन जब्त कर आरटीओ कार्यालय में खड़े कर दिए गए हैं।

इसके अलावा तीन अन्य बसों से बिना पीयूसी और चालक के पास वैध लाइसेंस न होने पर 25,000 रुपए का शमन शुल्क वसूला गया। आरटीओ अमले ने मौके पर ही दस्तावेजों की बारीकी से जांच की और जिन वाहनों में भारी खामियां पाई गईं, उनके खिलाफ तत्काल कार्रवाई की।

टीआई को सजा, एक हजार पौधे लगाने होंगे

एमपी हाईकोर्ट ने कहा- फोटो के साथ देनी होगी जीपीएस लोकेशन की रिपोर्ट

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर हाईकोर्ट ने गुरुवार को सतना के कोतवाली थाना के टीआई रावेंद्र द्विवेदी को अनोखी सजा सुनाई है। उन्हें चित्रकूट में एक साल में एक हजार फलदार पौधे लगाने होंगे और इनकी देखभाल भी करनी होगी।

हाईकोर्ट ने कहा कि कोतवाली थाना प्रभारी रावेंद्र द्विवेदी 1 जुलाई 2025 से 31 अगस्त 2026 के बीच पौधरोपण करेंगे। उन्हें पौधों के फोटो और उनकी जीपीएस लोकेशन की जानकारी भी कोर्ट में पेश करनी होगी।

इस मामले में अगली सुनवाई 16 सितंबर को होगी। कोर्ट ने निर्देश दिए हैं कि इससे पहले सतना एसपी को टीआई के लगाए गए पौधों का निरीक्षण करना होगा और अगली सुनवाई (16 सितंबर) पर इसकी रिपोर्ट कोर्ट में प्रस्तुत करनी होगी।

रावेंद्र द्विवेदी, टीआई

टीआई को इसलिए मिली पौधे लगाने की सजा- सतना के कोतवाली थाना प्रभारी रावेंद्र द्विवेदी ने रेप के एक मामले में कोर्ट के नोटिस की तामीली नहीं कराई थी। दरअसल, एक नाबालिग से दुराचार के मामले में सतना की जिला कोर्ट ने 10 अक्टूबर 2021 को राम अवतार चौधरी नाम के शख्स को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। इस पर दोषी ने हाईकोर्ट में अपील दाखिल की। जबलपुर हाईकोर्ट ने 30 सितंबर 2024 को पीड़िता को नोटिस जारी किया था। सतना कोतवाली पुलिस को नोटिस की तामीली करानी थी, जो नहीं हुई। जिसके बाद गुरुवार को इस मामले में जस्टिस विवेक अग्रवाल और जस्टिस अवनींद्र कुमार सिंह की डिवीजन बेंच ने सुनवाई करते हुए टीआई को अनोखी सजा सुनाई है।

टीआई बोले- मैं अपनी सजा पूरी करूंगा- हाईकोर्ट से मिली अनोखी सजा पर टीआई रावेंद्र द्विवेदी ने कहा कि वे कोर्ट से मिली सजा को पूरा करेंगे।

इंदौर में शिवराज-कैलाश की बंद कमरे में चर्चा

दोनों नेताओं ने की 18 मिनट बातचीत, केंद्रीय राज्यमंत्री ठाकुर बाहर इंतजार करती रहीं

इंदौर (नप्र)। इंदौर में गुरुवार को केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान और कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने 18 मिनट तक बंद में कमरे में चर्चा की। इस दौरान केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर कमरे के बाहर खड़े होकर बैठक खत्म होने का इंतजार करती रही। हालांकि दोनों सीनियर नेताओं ने अकेले में किस विषय पर चर्चा की इसकी जानकारी अभी सामने नहीं आई है। बता दें की आज केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान इंदौर में सोयाबीन हितग्राहियों से संवाद कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे थे।

इंदौर के सोयाबीन अनुसंधान केन्द्र में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान और कैलाश विजयवर्गीय ने पूरे 18 मिनट बंद कमरे में चर्चा की। इस दौरान विधायक मधु वर्मा, मनोज पटेल और बीजेपी नेता सावन सोनकर पास के कमरे में बैठे हुए थे। जबकि राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर कमरे के बाहर इंतजार कर रही थी। वहां मौजूद

अधिकारियों ने जब सावित्री ठाकुर के इंतजार करने की सूचना दी तो केंद्रीय मंत्री चौहान ने उन्हें 5 मिनट इंतजार करने को कहा। बता दें कि शिवराज सिंह चौहान और कैलाश विजयवर्गीय दोनों नेता 3 बजकर 13 मिनट पर कमरे में गए थे और लगभग 3 बजकर 30 मिनट में यानी पूरे 18 मिनट बाद कमरे से बाहर आए। मीडिया द्वारा सवाल पूछे जाने पर मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा की शिवराज सिंह चौहान जी से सामान्य मुलाकात करने आया था।

बुंदेलखंड साहित्य अकादमी की होगी स्थापना- लोधी

संस्कृति परिषद् भवन का किया निरीक्षण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश की संस्कृति और साहित्य को संरक्षित एवं संवर्धित करने के लिए योजना बनाकर तेजी से कार्य किया जा रहा है। सभी स्थानीय बोलियों और भाषाओं में साहित्य सृजन एवं साहित्यिक गतिविधियों पर समान रूप से ध्यान दिया जा रहा है। बुंदेली में साहित्यिक गतिविधियों के पोषण और संवर्धन के लिए बुंदेलखंड साहित्य अकादमी की स्थापना की जाएगी। यह बात संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने संस्कृति परिषद् के भवन के निरीक्षण के दौरान अधिकारियों से कही। राज्य मंत्री श्री लोधी ने कहा कि प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता हमें संस्कृति के क्षेत्र में अग्रणी बनाती है, इसे संरक्षित करने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए।

राज्य मंत्री श्री लोधी ने भवन के रेनोवेशन के बाद अकादमियों के कार्यालय को कार्य अनुसार व्यवस्थित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कार्यालय में वृहद और विस्तृत पुस्तकालय है जिसमें

लगभग सभी प्रकार का साहित्य उपलब्ध है। आगामी समय में साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकों और विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तकालय खोला जाएगा। पुस्तकालय में उचित सुविधाएं विकसित करें। नए युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की दिशा में कार्यालयों के डिजिटलाइजेशन पर भी कार्य किया जाए।

राज्य मंत्री श्री लोधी ने संस्कृति परिषद् के भवन पहुंचकर व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। उन्होंने कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों से परिचय प्राप्त कर कुशल कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। राज्य मंत्री श्री लोधी ने 'सिंधु मसाल 2023' पत्रिका के द्वितीय अंक का विमोचन भी किया। इस अवसर पर संस्कृति परिषद् की निदेशक डॉ. पूजा शुक्ला और साहित्य अकादमी के निदेशक श्री विकास दवे सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

चलती ट्रेन से उतरा...शक में पकड़ा, चोर निकला

भोपाल स्टेशन के पास से दबोचा; 4 मोबाइल, एक पर्स जब्त

भोपाल (नप्र)। भोपाल रेलवे स्टेशन पर चलती ट्रेन से उतरे एक युवक को पुलिस ने शक में पकड़ लिया। जब उससे पूछताछ की गई तो वह चोर निकला। उसके कब्जे से 4 मोबाइल और एक पर्स जब्त किया गया है। पर्स उसी ट्रेन की एक महिला यात्री का था।

रेलवे के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने बताया, रेलवे सुरक्षा बल के आरक्षक अमित कुंडू एवं आरक्षक धर्मेंद्र कुमार शिफ्ट के दौरान मोटर साइकिल से गश्त कर रहे थे। इसी दौरान वे तड़के 4 बजे भारत टॉकीज ब्रिज के पास पहुंचे। वहां गाड़ी संख्या 18234 (छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस) के गुजरते समय एक युवक को चलती ट्रेन से उतरकर संदिग्ध स्थिति में भागते हुए देखा।

संदेह के आधार पर उक्त युवक को रोका और पूछताछ की तो उसने अपना नाम नावेद उम्र 32 वर्ष निवासी भोपाल बताया। तलाशी के दौरान उसके पास से चार मोबाइल फोन एवं एक लेडिस पर्स बरामद हुआ। पूछताछ में उसने

स्वीकार किया कि लेडिस पर्स उक्त गाड़ी संख्या 18234 और मोबाइल फोन अन्य ट्रेनों से चोरी किए हैं।

जीआरपी पुलिस को सौंपा मामला- इसके बाद दोनों आरक्षक आरोपी को जीआरपी भोपाल लेकर पहुंचे। जहां से आगे की कार्रवाई के लिए उसे जीआरपी थाना रानी कमलापति को सौंप दिया। आरोपी के विरुद्ध बीएनएस की धारा 305(C) के तहत केस दर्ज किया है।

यात्री भी अपने सामान का ध्यान रखें- वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक कटारिया ने बताया कि रेलवे स्टेशन पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम हैं, लेकिन यात्री भी अपने सामान का ध्यान रखें। ताकि, इस प्रकार की वारदात न हो सके।

संपादकीय

महाराष्ट्र : हिंदी पर सियासत

महाराष्ट्र के स्कूलों में त्रिभाषा फार्मूले के तहत हिंदी की पढ़ाई अनिवार्य करने को लेकर सियासत और तेज हो गई है। अभी तक राज्य में विपक्ष इसे मुद्दा बना रहा था, लेकिन अब सत्तारूढ़ महायुति के मुख्य घटक राकांपा के प्रमुख और उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने भी इसके खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। अजित पवार ने सीधे सीधे राज्य सरकार की तीसरी भाषा नीति पर ही सवाल खड़े कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों पर शुरुआत से ही अतिरिक्त भाषाई बोझ डालना उचित नहीं है और हिंदी की पढ़ाई कक्षा 5 से शुरू होनी चाहिए। मंगलवार को पत्रकारों से बात करते हुए पवार ने कहा कि छात्रों को मराठी की शिक्षा कक्षा 1 से मिलनी चाहिए ताकि वे भाषा को पढ़ने और लिखने में दक्ष हो सकें। लेकिन हिंदी को कक्षा 1 से पढ़ाना जरूरी नहीं है। इसके पहले शिवसेना (उद्धव) और मनसे के राज ठाकरे ने राज्य में हिंदी की पढ़ाई अनिवार्य करने के खिलाफ खुलकर विरोध शुरू कर दिया था। दोनो भाइयों का दांव यह है कि हिंदी विरोध की आड़ में मराठी माणूस वाली राजनीति को तेज किया जाए और मराठी भाषा व अस्मिता का मुद्दा उछालकर अपनी सियासी जमीन मजबूत की जाए। उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार ने नई शिक्षा नीति के अंतर्गत सभी राज्यों में बच्चों को प्राइमरी से तीन भाषाएं पढ़ाने का फार्मूला लागू किया है। इसमें पहली मातृभाषा, दूसरी अंगरेजी और तीसरी हिंदी होगी। इसी के तहत राज्य की फडणवीस सरकार ने पिछले दिनों आदेश निकाला था कि राज्य में सभी मराठी और अंग्रेजी माध्यम स्कूलो में अब पहली क्लास से पांचवीं तक तीसरी भाषा के रूप हिंदी पढ़ाई जाएगी। स्थानीय स्तर पर इसका ज्यादा विरोध नहीं हुआ, क्योंकि एक तो महाराष्ट्र में हिंदी दूसरी संपर्क भाषा है तथा महाराष्ट्र से बाहर जाने वालों के लिए हिंदी जानना जरूरी है। वैसे राज्य के स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई पहले से ही रही थी। लेकिन उसे पढ़ना अनिवार्य नहीं था। जब विपक्ष ने इसे हिंदी थोपने के रूप में प्रचारित किया तो फडणवीस सरकार ने बैकफुट पर जाकर उसकी अनिवार्यता का आदेश वापस ले लिया। साथ में यह भी जोड़ा कि हिंदी से इतर कोई भी तीसरी भारतीय भाषा तभी पढ़ाई जा सकेगी, जब उसके कम से कम 20 विद्यार्थी होंगे। यानी कोई महाराष्ट्र में रहकर अपनी मातृभाषा गुजराती या कन्नड सीखना चाहेगा तो पढ़ाई तो जाएगी लेकिन विद्यार्थियों की संख्या कम होने पर उसकी पढ़ाई ऑन लाइन होगी। जाहिर है ऐसी स्थिति में ज्यादातर विद्यार्थी हिंदी का विकल्प ही चुनेंगे। हैरानी की बात यह है कि हिंदी विरोध की इस मुहिम में राजनेताओंके अलावा वो मराठी कलाकार भी शामिल हो गए, जो हिंदी फिल्मो में सीरियलों में काम करके खासा पैसा कमाते हैं। राज्य में हो रहे भारी विरोध के बाद मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने स्पष्ट किया कि तीसरी भाषा नीति पर अंतिम निर्णय सभी हितधारकों-साहित्यकारों, भाषाविदों और राजनीतिक नेताओं से विचार-विमर्श के बाद ही लिया जाएगा। जबकि महाराष्ट्र के सांस्कृतिक मामलों के मंत्री आशीष शेलार ने स्पष्ट किया कि राज्य में केवल मराठी भाषा ही अनिवार्य है, हिंदी नहीं। उन्होंने कहा कि स्कूलों में तीसरी भाषा पढ़ाने को लेकर चल रहा विवाद पूरी तरीके से अतार्किक है। दरअसल हिंदी के इस तमाम विरोध के पीछे असल कारण महाराष्ट्र में चार माह बाद होने वाले स्थानीय निकायों के चुनाव हैं। इस कारण हर पार्टी मराठी व मराठी संस्कृति के प्रति प्रेम दिखाने से नहीं चूक रही। भाजपा यह जानती थी इसलिए उसने हिंदी भाषियों को गोलबंद करने के लिए चुनाव के पहले ही यह आदेश जारी किया। विपक्ष ने चाल पकड़ ली और विरोध में मराठियों को लामबंद करने का दावं चल दिया।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

भारत में सहकारिता का है अमृतकाल

सहकारिता के सिद्धांत दरअसल सबकी उन्नति व सबके विकास में विश्वास करता है। इसीलिए हम देखते हैं कि सहकारिता मंत्रालय अपने सात सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सहकारिता सिद्धांतों का पालन करते हुए भारत की जन-स्थिति में सुधार की पहल कर रहा है। यथा खुली और स्वैच्छिक सदस्यता का इसमें भरपूर प्रावधान है। लोकतांत्रिक सदस्य नियंत्रण के साथ सदस्यों की आर्थिक भागीदारी उनकी स्वायत्तता और स्वतंत्रता को स्थापित करके चल रहा है। व्यापक शिक्षा, प्रशिक्षण और सूचना पर बल देने की प्रतिबद्धता है। सहकारिता समितियों के बीच सहयोग और समुदाय के लिए चिंता भी इसके सैद्धांतिक पहलू हैं। अब जब से भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमृत काल के पंच प्रण को जनमानस में रखा है तब से सहकारिता के स्वरूप में और सघन विकसित भारतोन्नति को सहयोग मिल रहा है।

भारत का यह अमृतकाल है। अमृतकाल की अर्जित उपलब्धियां आने वाले समय में भारतीय जनता को गर्व से भर देंगी। अमृत काल जीवंत भारत हेतु सहकार से समृद्धि की यात्रा है। भारत में सहकारिता आंदोलन आज़ादी से भी पहले जारी था। ऐसा मानते हैं कि यह सहकारिता आन्दोलन सवा सौ साल पुराना है। भारत में नरेंद्र मोदी सरकार आने के बाद इसका विशेष मंत्रालय बना। जिसका मुख्य जनादेश 'सहयोग से समृद्धि' की दृष्टि को साकार करना है। देश में सहकारिता आंदोलन को मजबूत करना है। जमीनी स्तर तक इसकी पहुंच को विस्तारित करना है। सहकारिता आधारित आर्थिक विकास मॉडल को बढ़ावा देना है। और साथ-साथ उपयुक्त नीति, कानूनी और संस्थागत निर्माण करना है। सहकारिता समितियों को उनकी क्षमता का एहसास कराने में मदद करने के लिए ढांचागत निर्माण सहकारिता मंत्री अमित शाह ने जब से शुरू किया है सहकारी क्षेत्र में कार्यरत लोगों में अत्यधिक उत्साह देखने को मिल रहा है। गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह का यह स्वप्न बहुत लम्बे समय से था कि हम भारत में एक बार सहकारिता क्षेत्र का भरपूर विकास करके उन लोगों को विकास की मुख्य धारा में सम्मिलित करें जो अभी भी किन्हीं कारणों से विकास की धारा से वंचित रहे हैं।

सहकारिता के सिद्धांत दरअसल सबकी उन्नति व सबके विकास में विश्वास करता है। इसीलिए हम देखते हैं कि सहकारिता मंत्रालय अपने सात सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सहकारिता सिद्धांतों का पालन करते हुए भारत की जन-स्थिति में सुधार की पहल कर रहा है। यथा खुली और स्वैच्छिक सदस्यता का इसमें भरपूर प्रावधान है। लोकतांत्रिक सदस्य नियंत्रण के साथ सदस्यों की आर्थिक भागीदारी उनकी स्वायत्तता और स्वतंत्रता को स्थापित करके चल रहा है। व्यापक शिक्षा, प्रशिक्षण और सूचना पर बल देने की प्रतिबद्धता है। सहकारिता समितियों के बीच सहयोग और समुदाय के लिए चिंता भी इसके सैद्धांतिक पहलू हैं। अब जब से भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमृत काल के पंच प्रण को जनमानस में रखा है तब से सहकारिता के स्वरूप में और सघन विकसित भारतोन्नति को सहयोग मिल रहा है। 15 अगस्त, 2022 को स्वतंत्रता दिवस पर अपने भाषण में भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए अमृत काल आह्वान के पंच प्रण कुछ इस प्रकार थे-विकसित भारत का लक्ष्य, औपनिवेशिक मानसिकता के किसी भी निशान को हटा दें। अपनी जड़ों पर गर्व करें। एकता यानी राष्टीय एकीकरण की भावना और नागरिकों में कर्तव्य की भावना। यह वे प्रण हैं जिससे सच में भारत की छवि बदली जा सकती है। सहकारिता के लिए यह सब सूत्र हैं क्योंकि पञ्च प्रण से सबके साथ विकास व समृद्धि की नई परिभाषा रची जा सकती है और सबके आत्म गौरव को सुरक्षित व संरक्षित किया जा सकता है।

विश्व स्तर पर सहकारिता के विविध प्रयत्न पर भारत के सहकारिता मंत्री अमित शाह की नज़र रहती है। वह चाहते हैं कि भारतीय नागरिक चाहे वह गरीब हो, दलित हों, दमित हों, महिलायें हों या दिव्यांगजन हों, सबको सहकारिता का लाभ मिले। सहकारिता की भावना से सभी आगे बढ़ें। सहकारिता से सभी एक दूसरे के लिए कार्य करें क्योंकि अमित शाह की दृष्टि में परमार्थ का कार्य ही तो सहकारिता का कार्य है। एक दूसरे का सहयोग ही तो परमार्थ का कार्य है। सहकारिता का कार्य है। यह वर्ष अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष है। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के उद्घाटन कार्यक्रम का अभिभाषण स्मरण आ रहा है। इस अभिभाषण में अमित शाह ने कहा था कि अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 के दौरान सहकारिता के विस्तार, इस क्षेत्र में शुचिता लाने, सहकारी संस्थाओं को समृद्ध बनाने, कई नए क्षेत्रों में सहकारिता की पहुंच बढ़ाने और भारत के हर व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार से सहकारिता से जोड़ने की दिशा में आगे बढ़ने के प्रयास किए जाएंगे। यह एक बड़ी संकल्पना है कि भारत की 140 करोड़ वाली आबादी सहकारिता से जुड़े। सहकारिता को समझे। सहकारिता आन्दोलन में सम्मिलित हो। अमृतकाल में सहकारिता का अमृत-समय का हस्ताक्षर पूरे विश्व में भारत की ओर से अंकित करे।

बस्तुतः आत्मनिर्भरता बनाने की दिशा में यह कार्य है। अमित शाह यह जानते हैं कि अमृत काल की अगर सबसे सुंदर व्याख्या कुछ है तो वह सहकारिता। सहकारिता के बगैर किसान आत्मनिर्भर नहीं बन सकेगा। समृद्ध नहीं बन सकेगा। नरेंद्र मोदी के 'सहकार से समृद्धि' के नारे को यदि जमीनी स्तर पर देखना है तो इसके लिए बड़े पैमाने पर आमजन को सहकारिता से जोड़ने की आवश्यकता है। यदि अमृत काल में भारत के 2047 के संकल्प को भी चरितार्थ करना है तो सहकारिता से किया जा सकता है। इसे एक विकसित भारत का मॉडल तैयार करने की कोशिश के रूप में हम समझ सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन-आईसीए की स्थापना 1895 में हुई थी। यह सहकारी समितियों का प्रतिनिधित्व करने वाला शीर्ष निकाय है। यह विश्व की सहकारी संस्थाओं को एकीकृत करता है और उनका प्रतिनिधित्व व देखरेख करता है। आईसीए सहकारी समितियों के लिए और उनके बारे में ज्ञान, विशेषज्ञता और समन्वित कार्रवाई के लिए एक वैश्विक आवाज़ और मंच प्रदान करने वाला संगठन है। सभी को यह ज्ञात है कि संयुक्त राष्ट्र ने 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष घोषित किया है। आधुनिक सहकारी आंदोलन की जन्मस्थली 'रॉचडेल म्यूज़ियम' में अंतरराष्ट्रीय सहकारी संगठन-आईसीए की सहकारी सांस्कृतिक विरासत कार्य समूह की बैठक होने वाली है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 विशेष सेलीब्रेशन के ही तहत यह समूह 25 ऐतिहासिक सहकारी स्थलों का डिजिटल वर्ल्ड मैप लॉन्च करने की योजना बना चुका है। यह संगठन सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व वाले स्थलों की पहचान के लिए वैश्विक दिशा-निर्देश तैयार करने वाला है। खास बात यह है कि इस परियोजना का उद्देश्य सहकारी आंदोलन के महान अग्रदूतों, परिवर्तनकारियों व समर्पित लोगों की विरासत को उजागर करना और उस परंपरा को सम्मान देना है जिसने इस वैश्विक आंदोलन को जन्म दिया। अमित शाह की योजना है कि देश के सहकारिता आंदोलन को इस महान प्रदर्शनी में सम्मिलित किया जाए और भरतोय सहकारिता की दुंदुभी पूरे विश्व में बजे।

देखा जाए तो सहकारिता की भारतीय यात्रा को उनकी सोच से अब प्रतिबिंबित करना ज़रूरी है क्योंकि अमित शाह के इरादे बहुत नेक हैं। उन्होंने सार्वजनिक रूप से और विभिन्न आयोजनों में इस बात पर जोर दिया कि सहकारिता आंदोलन की चर्चा इसकी विफलताओं तक सीमित नहीं रह सकती। इफको, कृभको, अमूल और नैफेड जैसी संस्थाओं ने सफलता की कई कहानियां गढ़ी हैं। देश भर के किसानों की मेहनत और सरकार की योजनाएं ही इस आंदोलन की असली रीढ़ हैं।

सहकारिता के लिए यह सोच देश को पहले मिल जाती तो देश में आज़ सहकारिता के बिंब कुछ और होते। लेकिन यह सबकुछ हो रहा है आज़ादी के 75 वर्ष बाद, उसके अमृतकाल में जब सहकारिता आंदोलन को अमित शाह जैसा नेतृत्व प्राप्त हुआ है। सहकारिता की अमृत यात्रा इसलिए अब विशेष उपलब्धियां अर्जित कर रही है। सहकारिता को नए पंख लग गए हैं और देश इससे विकास व समृद्धि की नई उड़ान भर रहा है। आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में सरकार की यह प्रतिबद्धता है। सहकारिता के इस अमृतकाल में सहकार से समृद्धि की इस बहुद्देशीय उल्लेखनीय उपलब्धि का देश को बहुत लाभ मिलने वाला है। अमित शाह की इनमें अपनी स्वयं की लगन, मेहनत व ईमानदार कोशिश अप्रतिम है जिसका देश कृतज्ञ रहेगा। क्योंकि अभी जो कुछ सफलताएं, उपलब्धियाँ देश के सहकारिता आंदोलन व आमजन को मिल रही हैं वह उनके सार्थक पहल व प्रयास से संभव हो पाया है।

राजनीति

अवधेश कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मोदी की दो टूक से ध्वस्त हुआ झूठा नैरेटिव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जी 7 के लिए कनाडा, उसके पहले साइप्रस और फिर क्रोएशिया तक की यात्रा अनेक अनेक अर्थों में विदेश नीति, समर-नीति से लेकर रक्षा, आंतरिक सुरक्षा तथा नैरेटिव के संदर्भ में जबरदस्त उपलब्धियों एवं परिणामों वाली मानी जाएगी। भारत के अंदर और बाहर विरोधियों को भी इस तरह सफलता को प्रतिध्वनित करने वाली यात्रा की कल्पना नहीं रही होगी। शायद इन शब्दों में किसी को अतिवाद दिखे किंतु क्या आपने कल्पना की थी कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ बातचीत में सीधे ऑपरेशन सिंदूर और भारत पाकिस्तान सैनिक टकराव रुकने संबंधी अमेरिकी दावे का ऐसा खंडन किया जाएगा? ऐसा नहीं है कि डोनाल्ड ट्रंप आगे भारत पाकिस्तान के संदर्भ में श्रेय लेने के लिए मध्यस्थता करने का दावा नहीं करेंगे। उन्होंने किया भी है। किंतु विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने दोनों नेताओं के बीच टेलीफोन पर 35 मिनट की हुई बातचीत का जो ब्यौरा दिया उसका ट्रंप प्रशासन द्वारा खंडन न किया जाना ही बताता है कि वक्तव्य पूरी तरह सच है। दो नेताओं की बातचीत में सामने वाले को कहा जाए कि आपने जो दावा किया वैसी बातचीत हमारे आपके बीच कभी हुई नहीं तो उस पर क्या गुजरेगी? विदेश सचिव विक्रम मिश्री की इन पंक्तियों को देखिए-, 'प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप को स्पष्ट रूप से कहा है कि ऑपरेशन सिंदूर के संबंध में कभी भी और किसी भी स्तर पर भारत-अमेरिका ट्रेड डील या अमेरिका की ओर से भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता जैसे विषयों पर बात नहीं हुई थी। सैन्य कार्रवाई रोकने की बात सीधे भारत और पाकिस्तान के बीच हुई। दोनों सेनाओं की बात मौजूदा चैनल्स के माध्यम से हुई थी। पाकिस्तान के ही आग्रह पर ये बातचीत हुई थी।' ट्रंप ने क्या उत्तर दिया यह सामने नहीं है। जरा सोचिए, अगर ट्रंप जी 7 बैठक बीच में छोड़ अमेरिका नहीं लौटे होते और आमने-सामने बातचीत होती तो कैसा दृश्य होता? कहीं ऐसा तो नहीं कि भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तेवर का आभास ट्रंप को हो और उन्होंने वहां से तत्काल निकल जाने में नहीं उचित समझा।

निश्चित रूप से देश में कांग्रेस सहित सारी पार्टियों और झूठे नैरेटिव से नकारात्मक इकोसिस्टम खड़ा करने वाले समूहों को धक्का पहुंचा होगा। भारत-पाकिस्तान के सैनिक टकराव रुकने के संबंध में ट्रंप के लगातार वक्तव्यों को आधार बनाकर संकुचित राजनीति के लिए जिस तरह का उपहास प्रधानमंत्री, भारतीय विदेश नीति व रक्षा नीति का उड़ाया जा रहा था उन सब पर तुषारापात हुआ है। सामान्य शिष्टाचार है कि ट्रंप अंकल का एक फोन आते ही मोदी ने युद्ध रोकने का आदेश दे दिया का नैरेटिव चलाने वाले कम से कम अफसोस प्रकट करें। किसी ने नहीं सोचा कि जब भारत की वर्षों पुरानी नीति कश्मीर को द्विपक्षीय मामला मानने तथा तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप न करने देने की है तो सरकार इससे परे नहीं जा सकती। वैसे भी नरेंद्र मोदी सरकार ने तो पाकिस्तान की सीमा में घुसकर आतंकवादी हमलों का प्रतिकार किया और नीतिगत बयान यही है कि केवल पाक अधिकृत कश्मीर को सुलझाना ही बचा हुआ है। प्रधानमंत्री ने अपने भाषणों में ही पाकिस्तान से किसी स्तर की बातचीत या तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को सीधे-सीधे नकारा। विदेश सचिव के वक्तव्य से यह धारणा भी खंडित हुआ कि इस बीच मोदी और ट्रंप के बीच कोई बातचीत हुई। वे कह रहे हैं कि उसके बाद दोनों नेताओं की पहली बातचीत थी। पूरे घटनाक्रम की स्थिति में यह तथ्य काफी महत्वपूर्ण है। यानी 9 मई को केवल अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के साथ बातचीत हुई जिन्होंने पाकिस्तान द्वारा भारत पर बड़े हमले की जानकारी दी थी और जवाब में प्रधानमंत्री ने कहा था कि भारत उससे बड़ा जवाब देगा और दिया गया। यानी युद्धविराम की उसमें भी कोई बात नहीं।

साफ है कि ऑपरेशन सिंदूर पर विरोधियों द्वारा बनाया नैरेटिव शर्मनाक तौर पर झूठा था। ट्रंप को भी सीधे प्रधानमंत्री से यह सुनने के बाद कि भारत अब आतंकवाद को प्रॉक्सी वार नहीं, युद्ध के रूप में ही देखता है और 'ऑपरेशन सिंदूर' अभी भी जारी है, हमारी नीति और तैयारी का स्पष्ट आभास हो गया होगा। यानी आप क्या सोचते और चाहते हैं वह नहीं हमारी सुरक्षा हमारे लिए महत्वपूर्ण है और यही नीति का मुख्य आधार है।

सामान्य तौर पर यह व्यवहार भी हैरत भरा है कि एक ओर ट्रंप पाकिस्तान के फिल्ड मार्शल जनरल असीम मुनीर को रात्रि भोज दे रहे हैं और प्रधानमंत्री मोदी से अमेरिका आने का आग्रह कर रहे हैं। यह अमेरिका की कैसी रणनीति है? मोदी सरकार ने ट्रंप प्रशासन के साथ सही रणनीति अपनाया और दूसरी प्रतिबद्धताओं की बात कह मोदी ने ट्रंप के निमंत्रण को ठुकरा दिया। यह भी ट्रंप और उनके प्रशासन के लिए सामान्य धक्का नहीं था। कनाडा से अमेरिका जाकर कुछ घंटे बातचीत करते हुए क्रोशिया जा सकते थे। इसका आभास भी ट्रंप और उनके प्रशासन को होगा कि प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसा कर भारत की नाराजगी प्रकट कर दिया है। मोदी को ट्रंप का आज्ञाकारी और न जाने क्या-क्या शब्द देने वाले कभी यह भी नहीं सोचते कि वह किसी व्यक्ति का नहीं 140 करोड़ भारतीयों के नेता और इस नाते भारत को छोटा दिखा रहे हैं। विचार इस पर होना चाहिए कि ट्रंप के व्यवहार में बदलाव आया क्यों? सब कुछ जानते हुए डोनाल्ड ट्रंप और उनका प्रशासन पाकिस्तान के साथ सम्मानजनक और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार कैसे करने लगा?

इसे भारतीय विदेश नीति की विफलता करार देना भी अनुचित है। भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो हैसियत है वह बनी हुई है। ऐसा नहीं होता तो जी7 के देश ही मांग नहीं करते कि सम्मेलन में भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति होनी ही चाहिए। प्रधानमंत्री ने वहां आतंकवाद पर खड़ी-खरी सुनते हुए कहा भी आतंकवाद पर हमारा रवैया नहीं बदला तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। एक ओर तो हम अपने अनुसार किसी पर प्रतिबंध हैं और दूसरे आतंकवाद के मुख्य केंद्र को समर्थन करते हैं। अमेरिका , यूरोप पाकिस्तान की भूमिका के बारे में पूरी जानकारी रखते हैं। किंतु उनकी सोच है कि पाकिस्तान अलग-थलग होकर पूरी तरह चीन के पाले में चला जाएगा और एक उग्रवादी अराजकतावादी देश बन जाएगा। ये नहीं चाहते कि पाकिस्तान को अलग-थलग कर उसे पूरी तरह चीन के पाले में जाने और उग्रवादी अराजकतावादी देश बनने की ओर धकेल दें। एक समय पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय जेहादी आतंकवाद का मुख्य केंद्र था। आज वह उसी रूप में उनके लिए खतरा नहीं है जैसा भारत के लिए है। अमेरिका की उसके पड़ोसी अफगानिस्तान और ईरान से उपस्थिति भी खत्म है।

भारत को इसका ध्यान रखते हुए ही नीतियां बनानी है और बना भी रहा है। आतंकवादी हमले होंगे तो सब साथ होने का बयान देंगे, लेकिन पाकिस्तान पर हमले में साथ नहीं मिलेगा। तो सबक यही है कि विरोधी मोदी विरोध के नाम पर भारत को छोटा दिखाने के लिए इस तरह झूठ नैरेटिव से बचें।

बचपन के घाव, भविष्य की पीड़ा

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

हमारे जीवन का सबसे सुखद पल बचपन के होते है। यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि सुखद भविष्य की नींव हमारे बचपन में ही रख दी जाती है, किन्तु आजकल समाज में जिस प्रकार की कुरीतियों को देखा जा रहा है, क्या उनका कारण भी बचपन है?

जवाब हम सबको पता है। आजकल की बढ़ती क्रूरताएं हमारे भीतर की वह कुंठाएं है जिसे हमने अपने घरों में महसूस किया होगा। बचपन की मार सिर्फ हमारे शरीर पर घाव नहीं देती थी, वह हमारी आत्मा को भी छलनी कर देती है। अभी कुछ दिन पहले की खबर ने मुझे भीतर से झकझोर दिया, जहां एक डॉक्टर दम्पति द्वारा अपनी गोद ली हुए बेटी की निर्ममता से पिटाई का वीडियो सामने आई। सोचकर भी दिल दहल जाता है कि अगर वह वीडियो नहीं बना होता तो हम जान ही नहीं पाते कि वह बच्ची अपने ही घर में क्या सह रही है?

ऐसी न जाने कितनी कहानियाँ अपनी चार दीवारों में बंद है, लेकिन उनके परिणाम भविष्य के गर्भ से बाहर आने को बेताब है। अपनी परिस्थितियों से विवश होकर हम गलत रास्ते पर चल देते है, किन्तु क्या हमारी परिस्थितियाँ हमारे बीते कल की परछाई नहीं होती? कल की फिल्मों में भी जब जीवन का संघर्ष दिखाया जाता था, तब भी उस किरदार के बचपन पर प्रश्नचिह्न लगे होते थे। हम जो अब रोज बच्चों के नए नए दुःखद वीडियो देखते है, क्या वह कल एक सामान्य जीवन जी पाएंगे? कुछ लोगों के लिए यह कहना बहुत आसान होगा कि बीते कल की कडवी यादों को भूलकर आने वाले कल और अपने आज पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। कुछ बातों को कहना और उन्हें महसूस करने में जमीन - आसमान का अंतर है। शरीर के घावों की मरहम कभी आत्मा के जख्मों को ठीक नहीं कर सकती।

बचपन में होने वाली बेरहमी से पिटाई मात्र शरीर को घाव नहीं देती बल्कि उस विश्वास को तोड़ देती है कि क्या हम अपनों के लिए ही बोझ बन गए है? अपने ही घरों में होने वाले शारीरिक शोषण को झेलना और उसके बाद उम्र भर सामन्य रहने का नाटक करना किसी मानसिक प्रताड़ना से कम नहीं है। कई बार समाज में फ़ैल रहे आपराधिक मामलों में वह लोग सम्मामिलित होते है, जिन्हें किसी न किसी रूप से अपने भीतर की कुंठा से राहत पानी होती है और बिना किसी सही मार्गदर्शन के वह क्षितिज के छोर को पकड़ने निकल पड़ते है। माता-पिता का तलाक देखने वाले बच्चे या तो कभी शादी नहीं करते या फिर अपने ऊपर एक ऐसे बोझ को ढोते है, जिसमें उन्हें अपनी शादी के सुख को जीने का अवसर तो कम मिलता है अपितु उस रिश्ते को निभाने की जदोजहद में वह अपना जीवन काट देते है। हर सामान्य इंसान की तरह टूटे रिश्तों और बोझिल बचपन को झेलते लोगों के दर्द को समझना सबके बस की बात नहीं है। उन्हें प्यार भी भीख की तरह या दया की तरह दिया जाता है।

तुम तो मेरे बेटे या बेटी जैसी हो। इन जैसे शब्दों में कभी अपनापन नहीं होता पर ऑप्शन ज़रूर होता है कि सामने वालों को इन जैसे रिश्तों की ज़रूरत कब और कितनी है, यह भी वह सामने वाले ही तय करते है। लेकिन फिर भी यह मासूस रिश्ते हर उस नजर को एक उम्मीद मानते है जो कुछ पल के लिए ही सही, पर इनकी तरफ देखती ज़रूर है। अगर न चाहते हुए हम अपने बचपन को एक खुशनुमा याद में नहीं तब्दील कर पाए तो कोई बात नहीं अगर हमें इश्वर फिर से अवसर दें कि अपने बाकी के जीवन को सही दिशा प्रदान कर सकें, तो किसी और के बचपन को संवार कर देखें। आपको अपना जीवन अर्थपूर्ण लगने लगेगा। हम सबको किसी न किसी की ज़रूरत है। बस इंतजार है तो उस हाथ का जो हमें प्रेम से थामे न कि हम उसके लिए एक विकल्प हो। उस हर आँख के आंसुओं को पोछें जो बरसों से भीतर की घुटन को खुशी के आंसुओं का नाम दे रही है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

विवेक रंजन श्रीवास्तव

लेखक व्यंग्यकार हैं

ईश्वर की प्रोडक्ट, पैकिंग इंडस्ट्री और इंसान

ईश्वर की प्रोडक्शन और पैकिंग इंडस्ट्री वाकई अद्वितीय है, अद्भुत है, बेमिसाल है। एक छोटी सी मूंगफली देखिए ना! हर दाना गुलाबी पन्नी की चादर में लिपटा हुआ, मखमली नर्मी के साथ, ब्राउन टफ कवर में एकदम सुरक्षित। कोई खरोंच नहीं, कोई दाग नहीं। बाहर से कुरकुरा अंदर से मुलायम। पैकेजिंग पर्फेक्शन का परचम। मटर के दाने हरी-भरी चमकदार रैपर में सजे हुए, जैसे छोटे-छोटे हरे मोती। वे भीतर से ताजगी भरे, बाहर से चमकदार। और नारियल भला उस जैसे सख्त, भारी-भरकम उत्पाद के लिए हार्ड कवर से बेहतर क्या हो सकता है? जंगल की गर्मी, समुद्र की नमी, ऊंचे पेड़ से गिरने का झटका सब झेल लेता है वह हार्ड शैल। सचमुच, ईश्वर का हर काम समयबद्ध, व्यवस्थित और पैकेजिंग मास्टरपीस है। फिर आता है मानव 'ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना'। यहीं पर ईश्वर की उस अद्भुत पैकिंग फैक्ट्री और प्रॉडक्ट की कहानी में एक मोड़ आ जाता है। क्या वाकई मानव का पैकेजिंग जीनियस उसी स्तर का है? थोड़ा गहराई से देखने पर तस्वीर कुछ और ही बयां करती है।

सोचिए, ईश्वर की डिवाइन पैकेजिंग कंपनी में बैठे डिजाइनर्स ने मनुष्य के लिए क्या-क्या प्लान किया होगा। शायद उन्होंने सोचा होगा 'चलो, इस बार कुछ बहुत खास करते हैं। सबसे कॉम्प्लेक्स मशीनरी, सबसे एडवांस्ड सॉफ्टवेयर, दिमाग, इमोशनल रेंज से लैस, क्रिएटिविटी के साथ। सुपर प्रीमियम प्रोडक्ट!' लेकिन जब पैकेजिंग की बारी आई... कहीं न कहीं कुछ चूक हो गई लगती है।

पहला सवाल तो यही उठता है ,क्या 'सर्वश्रेष्ठ रचना' के लिए यह पैकेजिंग उचित है? मूंगफली को गुलाबी पन्नी मिली, मटर को हरी रैपर, नारियल को हार्ड शैल। मनुष्य को मिला क्या? एक नाजुक चमड़ी का आवरण, जो धूप से झुलस जाता है, ठंड से कांपता है, थोड़ी सी खरोंच से खून बहने लगता है। इंसान सन क्रीम , पाउडर, नाइट क्रीम खरीद कर भी परेशान है।

पीठ का डिजाइन एक ऐसी रीढ़ की हड्डी जो सीधे खड़े होने के लिए तो बनी है, लेकिन डेस्क जॉब, भारी बैग और गलत मुद्रा के आगे बहुत जल्दी विद्रोह कर देती है स्लिप डिस्क, बैक पेन की शिकायतें आम हैं। आंखें, जो दुनिया देखने का अद्भुत साधन हैं, लेकिन उम्र के साथ या तो कमजोर पड़ जाती हैं या मोतियाबिंद की शिकार हो जाती हैं, बिना चश्मे या लेजर सर्जरी के काम नहीं करतीं। क्या यह वही परफेक्ट पैकेजिंग है जो मूंगफली के दाने को मिली? दो दो किडनी की लक्जरी पर फिर भी डायलिसिस का झंझट।

और फिर फंक्शनल डिफेक्ट्स।एपेंडिक्स एक ऐसा अंग जिसका कोई ज्ञात काम नहीं, लेकिन जब चाहे फटकर जानलेवा बन जाता है। दांतों की कहानी? बचपन में दूध के दांत गिरते हैं, फिर परमानेंट आते हैं जो जीवन भर चलने चाहिए, लेकिन चीनी, एसिड और बैक्टीरिया के आगे बहुत जल्दी घुटने टेक देते हैं, बिना डेंटिस्ट के बचाव असंभव। घुटने और कूल्हे के जोड़ चलने-फिरने की मूलभूत आवश्यकता के लिए पर कितनी आसानी से घिस जाते हैं, रिप्लेसमेंट सर्जरी की मांग करते हैं। क्या ईश्वर की पैकिंग लाइन पर कोई क्वालिटी चेक नहीं होता था इन 'सर्वश्रेष्ठ मॉडल्स' के लिए?

और हां, सबसे बड़ा मिसिंग आइटम, इस्तेमाल करने का निर्देश, यूजर मैनुअल । नारियल के हार्ड कवर को तोड़ने के तरीके तो लोग जानते हैं। मटर को रैपर से निकालना आसान है। मूंगफली की पन्नी उतारने में कौन सी बुद्धिमानी लगती है? पर मनुष्य उसे कोई क्लियर मैनुअल नहीं मिला। कैसे जियें? कैसे तनाव मैनेज करें? कैसे दूसरों के साथ रहें? कैसे इस जटिल मशीन शरीर और मन की देखभाल करें? इसकी जगह हमें धर्म, दर्शन, विज्ञान और ट्रायल-एंड-एरर के भरोसे छोड़ दिया गया। नतीजा? भारी भ्रम, संघर्ष और गलतियां। क्या यह उस परफेक्ट पैकिंग इंडस्ट्री की शान के अनुरूप है?

तो क्या निष्कर्ष निकालें? क्या ईश्वर की पैकिंग इंडस्ट्री मनुष्य के मामले में फेल हो गई? या फिर यह एक जानबूझकर किया गया एक्सपेरिमेंट था? शायद 'सर्वश्रेष्ठ रचना' का मतलब यह नहीं कि वह सबसे परफेक्टली पैक्ड है, बल्कि यह कि उसमें खुद को ठीक करने, सीखने, अनुकूलित होने और अपनी पैकेजिंग की कमियों को पूरा करने की अद्भुत क्षमता दी गई है? हम चश्मा लगाते हैं, घुटने बदलवाते हैं, थेरेपी करते हैं, ज्ञान अर्जित करते हैं। शायद मानव की असली 'सर्वश्रेष्ठता' उसकी अपूर्ण पैकेजिंग के बावजूद या शायद उसी की वजह से खुद को सुधारने, संवारने और जीवन की चुनौतियों से लड़ने की अदम्य क्षमता में निहित है। मूंगफली सिर्फ खाई जा सकती है, मनुष्य खुद अपनी पैकेजिंग को री-डिजाइन करने का प्रयास करता रहता है। यही शायद उसकी सच्ची महानता है। ईश्वर की प्रोडक्शन, पैकिंग में एक जानबूझकर छोड़ा गया, रहस्यमय और चुनौतीपूर्ण, लेकिन संभावनाओं से भरा अधूरापन। बाकी सब तो बस पन्नी और रैपर का खेल है! डोंट जज एनी थिंग ऑन बेसिस ऑफ कवर ओनली।

वक्रोक्ति

सुधीर मोता

लेखक साहित्यकार हैं।

हमें सच्ची का आम आदमी चाहिये जिस पर हम लिख सकें

कुछ-कुछ समझ में आ रहा अब। उसने उस पर अब लिखना छोड़ दिया जिस के लिये लिखता रहना था। वो आम आदमी उस के हाथ से फिसल गया। वो आम आदमी अब पार्षद, विधायक बन गया। उद्योगपति बन गया। जज बन गया। कोठे पर जा कर सुख ढूंढने वाला हताश प्रेमी कोठी मालिक बन गया। इन पर लिख कर उसे पिटना थोड़े था। धीरे धीरे व्यंग्यकार को लगने लगा खतरे बढ़ गये हैं। उस ने निशाने पर मीनारों को लेना शुरू कर दिया। अब वह सुरक्षित था। उसे ये तरीका ठीक लग रहा था। कौन मुर्दों और मुद्दों पर लिखे। प्रवृत्ति पर चोट करे। इसमें फायदा ये था कि मीनारों पर रहने वाले कभी उसे ठोकने पीटने नहीं आते थे। एक और लाभ ये हुआ कि मीनारें एक के बाद और बनने लगीं। देश भर में मीनारें ही मीनारें तन गईं।

व्यंग्यकार के सामने बड़ी उलझन है। इस बार मामला विश्व स्तर का है । अब तक वह ब्रह्मांड भर में किसी भी बात पर लिख सकता था । पर इस बार मामला अजीब है। वह अजीबो गरीब पर भी लिख सकता था पर ये अजीबो अमीर मसला है। देश में इमर्जेंसी लगी उस पर बहुत कुछ बना, भले तब ना लिखा बाद में लिखा। पर लिखा। उस वक्त लिख कर क्या जेल जाते? इंजीनियर पर लिखा, डॉक्टर पर, ठेकेदार पर, मास्तर पर सब पर लिखा। खूब धारदार लिखा। हर प्रधान मंत्री पर लिखा। मंत्री पर, मंत्रीमंडल पर, सब पर लिखते रहे। अभी अभी आतंकवादी हरकतें हुईं। सब ने अपनी अपनी पसंद नापसंद अनुसार लिखा। हमारा काम लिखना है सो व्यंग्य के भाव उफान पर हो तो हम सीधे सीधे निशाना साध कर गोला दागते हैं, भले इस चक्कर में हम किसी न किसी पार्टी के प्रवक्ता लगनें लगें। आप इसे व्यंग्य ना कह कर भड़ास निकालना कह सकते हैं। पर अब क्या करें ? पाकिस्तान इजराईल ईरान अमेरिका फिलिस्तीन बांगलादेश यूक्रेन रूस घांस फूस इत्यादि आदि अनंत और हमारा अपना देश। दुनिया में जब त्रिकोण में भी इतने सारे कोण बनें तो आप कैसे गोल दागेंगे ? हमारे दो ही हाथ हैं दायां और बांया। किस हाथ से विषय उठायें। लिखते लिखते पात्र एक खेमे से दूसरे खेमे में चले जा रहे। हम तो घोषित खेमे में हैं। कैसे नमकहरामीपन कर लें। चलो अभी हम खेमे से बाहर मैदान में आ कर कुछ लिखने की कोशिश कर लेते हैं, कलम ही नहीं चलती। बड़े भाईजी क्या कहेंगे। भाई जी तो खुद उलझन में हैं।

कुछ कुछ समझ में आ रहा अब। उसने उस पर अब लिखना छोड़ दिया जिस के लिये लिखता रहना था। वो आम आदमी उस के हाथ से फिसल गया। वो आम आदमी अब पार्षद, विधायक बन गया। उद्योगपति बन गया। जज बन गया। कोठे पर जा कर सुख ढूंढने वाला हताश प्रेमी कोठी मालिक बन गया। इन पर लिख कर उसे पिटना थोड़े था। धीरे धीरे व्यंग्यकार को लगने लगा खतरे बढ़ गये हैं। उस ने निशाने पर मीनारों को लेना शुरू कर दिया। अब वह सुरक्षित था। उसे ये तरीका ठीक लग रहा था। कौन मुर्दों और मुद्दों पर लिखे। प्रवृत्ति पर चोट करे। इसमें फायदा ये था कि मीनारों पर रहने वाले कभी उसे ठोकने पीटने नहीं आते थे। एक और लाभ ये हुआ कि मीनारें एक के बाद और बनने लगीं। देश भर में मीनारें ही मीनारें तन गईं। मीनारें खुश, उनमें बसने वाले खुश। उन बसने वालों ने नये रोजगार पैदा किये। रोजगार पाने वाले खुस। फिर समृद्धि इतनी बढ़ गई कि आम आदमी ने महंगे फोन लेने शुरू कर दिये और

बढ़ते खर्चों की आदतों से वह तंगी महसूस करने लगा। इन नव निर्धनों ने नये आम आदमी बनाये, पर हमारा व्यंग्यकार खुद ही अब नये लोक में रहने चला गया था। वहां सुख ही सुख था। इतना सुख कि उसने अपने संप्रदाय को भी नये कपड़े ला ला कर पहना दिये।

पर अब उसे अपने संप्रदाय की जानकारी बार बार घोषित करना पड़ती थी। उसके संप्रदाय वाले और वह स्वयं अपने को कहते पुरानी पहचान वाला ही थे क्योंकि जो नये कपड़े वे लाये थे वे ऊंचे ब्रांड के थे उनके दर्जी अमीर थे पर कट और सिलाई पहले जैसे ही थे। यह उदारीकरण उसे रास आ गया था। अब उसे कार पर चलने वाले साहूकार बुरे नहीं लगती थी क्योंकि उसकी स्वयं की कार कम भव्य नहीं थी। अब क्या किया जाये। दुनिया इतनी कुटिल हो गई जैसे नये नये हथियार आ गये वैसे ही विचारों में ऐसे ड्रोन मिसाइल लौह कवच आ गये कि क्या किया जाये। जब हर देश के पास ये सब हो तो जंग में किसी के पूरी तरह हारने जीतने का सवाल ही नहीं। आपके पास पैसे धेले ना हो तो क्या, असलहे के एवज में हुंडी पर दस्तखत करने से ले कर सौदेबाज़ी करने के सारे विकल्प बाज़ार में उपलब्ध हैं। व्यंग्यकार जानता है मुश्किल में वो ही नहीं पूरी दुनिया है। पर उसकी मुश्किल इसलिये सबसे बड़ी है कि वह कहां जाये किस पर लिखे, किस पर निशाना साधे। दुनिया अकसर ही शांति पुरस्कारों के लिये पहले युद्ध करवाती आई पर कमेटियों के पास सिफारिशों के इत्ते पर्चे कि किस पर सील ठोके ? आतंकवाद को पालने पोसने वाले, उसके शिकार हो कर उसे मदद करने वाले,अलग अलग धर्मों के और उनके भी अलग अलग फिरकों वाले, मातृभूमि की भूमिमात्र के लिये लड़ते हुए अपने बच्चों को पढ़ाई के बहाने पराये देशों में भेजने वाले कथित नायक और तो और स्वयं उम्मीदवार तक मैदान में आ गये, अपना रोना रोते हुए कि तुम हमें नहीं देने वाले।

लिखने के लिये बहुत कुछ अब भी है पर व्यंग्यकार बेईमान नहीं है, वह इसीलिये मुश्किल में है। इतनी जल्दी कैसे अपने को बदल ले, ऐसी गुलाटियां चल रहीं नायकों में कि खुद लेखक की अनामिका, तर्जनी, मध्यमा, छुटकी, ठेंगा, फलानी ढिमकी उंगलियां ही आपस में उलझ गईं। माथा देख तिलक भी करें तो कैसे, माथे देख देख अपनी ही मुंडी घूम रही। अब तो हाथ भी पाला बदलने को उतारू दिख रहे। लगता है अब इन सब सासों, ससुरों को लड़ता छोड़ कर फिर से आम आदमी पर लिखना पड़ेगा। पर वह है कहां ? कोई है जो अपने को आम आदमी मान ले ? भई, फिरी बांटने की बात नहीं हो रही हमें सच्ची का आम आदमी चाहिये जिस पर हम लिख सकें। कोई हो तो संपर्क करे, चौबीस घंटे में कभी भी, हम फिर से आम लेखक बनने जा रये।

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

(लेखक गांधी विचारों के अध्येता व समाजसेवी हैं)

जनसमस्या का प्रकाशन या प्रसारण ही पर्याप्त नहीं है

बेहतर हो यदि विभिन्न प्रकाशन एवं प्रसारण संस्थान उनके माध्यम से उठाई गई समस्या के अंतिम निराकरण तक अलग-अलग स्तर पर सक्रिय भूमिका का निर्वहन करें। इस संदर्भ में और भी अधिक बेहतर तो यह हो कि किसी समस्या के प्रकाशन या प्रसारण के पीछे मूल जनभावना के अनुरूप निराकरण को मीडिया संस्थान द्वारा प्रतिष्ठा का प्रश्न मान लिया जाए। हालांकि व्यावहारिक तौर पर ऐसा होना थोड़ा बहुत जटिल हो सकता है, लेकिन मीडिया को उससे की गई जनअपेक्षा के अनुरूप ढालने की दिशा में यह कदम मिल का पत्थर सिद्ध होगा। अन्यथा केवल और केवल दर्द का इजहार, केवल दर्द का इजहार ही होगा - उसका उपचार नहीं हो सकेगा।

प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा व्यापक जनहित में विभिन्न समस्याओं को दर्शाया जाता है, तमाम विसंगतियों को भी उकेरा जाता है और उसके समाधान की आशा की जाती है। जिसके चलते पीड़ित पक्ष या समुदाय को एक हद तक बहुत सुकून मिलता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक उपयोग जितना कि मीडिया कर सकता है और करता है, उतना कर पाना आम नागरिक के बूते की बात नहीं होती। इस संदर्भ में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका निकल कर आती है। हर एक खबर का व्यापक असर होना चाहिए, इस संदर्भ में मीडिया संस्थान की अतिरिक्त जागरूकता भी अपेक्षित है। अन्यथा प्रकाशन और प्रसारण का क्या ओचित्य रह जाता है ?

बेहतर हो यदि विभिन्न प्रकाशन एवं प्रसारण संस्थान उनके माध्यम से उठाई गई समस्या के अंतिम निराकरण तक अलग-अलग स्तर पर सक्रिय भूमिका का निर्वहन करें। इस संदर्भ में और भी अधिक बेहतर तो यह हो कि किसी समस्या के प्रकाशन या प्रसारण के पीछे मूल जनभावना के अनुरूप निराकरण को मीडिया संस्थान द्वारा प्रतिष्ठा का प्रश्न मान लिया जाए। हालांकि व्यावहारिक तौर पर ऐसा होना थोड़ा बहुत जटिल हो सकता है, लेकिन मीडिया को उससे की गई जनअपेक्षा के अनुरूप ढालने की दिशा में यह कदम मिल का पत्थर सिद्ध होगा। अन्यथा केवल और केवल दर्द का इजहार, केवल दर्द का इजहार ही होगा - उसका उपचार नहीं हो सकेगा।

महज खबर का प्रकाशन या प्रसारित हो जाना ही पर्याप्त नहीं होगा। दरअसल ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी समस्या या विसंगति को लेकर शासन-प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया गया है, और वह महज खबर के रूप में छपकर या प्रसारित होकर ही रह जाएं। वास्तव में मीडिया की प्रामाणिकता और प्रभावशीलता जनमानस के अंतर्मन में स्थापित होनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि कोई खबर छपी या प्रसारित हुई और उसका छपना या प्रसारित होना सार्थक नहीं हुआ। महज खबर छप गई या प्रसारित हो गई, इसे ही अपने धर्म या कर्तव्य की इतिश्री मान लेना, कोई अच्छी बात नहीं।

वैसे इस संदर्भ में शहरों की बात कुछ और होती है। वहां किसी समस्या के प्रकाशन या प्रसारण पर एक बार त्वरित रूप से ध्यान दिया जा सकता है। लेकिन नगरीय एवं ग्रामीण अंचलों में यह देखा गया है कि कोई भी जनसमस्या चाहे वह किसी भी स्तर की हो, उसके निराकरण की आशा रखने वाले वर्ग के लिए क्षेत्रीय एवं स्थानीय संवाददाता ही वह माध्यम है, जिसके चलते उनकी समस्या का प्रकाशन या प्रसारण संभव होता है। यह स्थिति इस ओर इंगित करती है कि जनमानस में यह धारणा व्याप्त है कि जब कहीं किसी स्तर पर उनकी फरियाद नहीं सुनी जाती हो या उनकी फरियाद को सुनकर अनसुनी कर दी जाती हो, तो कम से कम मीडिया तो उनके दर्द को समझेगा।

यही विश्वास हमारे लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की व्यापक साख का एकमात्र कारण है। इस नाते विभिन्न मीडिया संस्थान के लिए यह समझना जरूरी है कि उनके प्रति जनविश्वास को कोई ठेस न पहुंचे। हालांकि अधिकांश खबरों पर संबंधित विभाग तथा संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग द्वारा फौरी तौर पर ही सही लेकिन ध्यान दिया जाता है, लेकिन इस बात के प्रति कोई आश्वस्ति नहीं होतो कि कोई खबर सामने आई है तो उसका अपेक्षित निराकरण हो ही जाएगा। दरअसल समस्या है तो उसका निराकरण होना या न होना, केवल और केवल उनके ही हाथों में होता है जिनसे उसके निराकरण की अपेक्षा की जाती है।

ऐसी स्थिति में बिना कोई ठोस बंधन के चलते अनेक समस्याएं तो छपकर या प्रसारित होकर भी कहीं से कहीं तक कोई परिणाम नहीं दे पाती। कभी-कभी तो गंभीर से गंभीर समस्या का निदान भी नहीं हो पाता। यह स्थिति एक प्रकार से मीडिया की प्रभावशीलता पर प्रश्नचिन्ह लगती है। दरअसल समस्या का उल्लेख है तो उसका निराकरण और विसंगतियों को लेकर ध्यानाकर्षण है तो उसका त्वरित निदान अपेक्षित होता है। ऐसा होने पर ही लोकतंत्र का यह चौथा स्तंभ सच्चे अर्थों में लोकतंत्र की सार्थकता सिद्ध कर सकेगा।

विचार

ब्रजेश कानूनगो

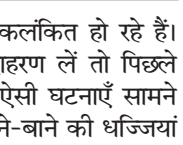

आत्मीय रिश्तों के टूटते नाजुक सूत्र

बडी अजीब स्थति है कि आज के समय में जब कोई व्यक्ति जीवन मे नैतिक मूल्यों की बात करता है तो लगता है जैसे उसने सतयुग का कोई पौराणिक आख्यान शुरू कर दिया हो। भस्मासुर की कहानी की तरह हमसे ही कहीं गंभीर भूल हो गई लगती है जो हमने संवेदनहीनता का अस्त्र अपने बच्चों के हाथों मे थमा दिया है जिससे लगातार रिश्तों की पवित्रता पर प्रहार हो रहा है। रिश्तों के आत्मीय सूत्र और संवेदनाओं के सेतु मूल्यहीन संस्कारों के चलते क्षत-विक्षत हो चुकें हैं। जो कारण स्पष्ट दिखाई देता है वह परिवार सहित किसी भी ऐसी संस्था के प्रभाव का लगातार कम होते जाना हो सकता है जो प्रारम्भ से ही बच्चों को सरस और सार्थक जीवन जीने की राह दिखाती हो।

वर्तमान समाज में रिश्ते कलंकित हो रहे हैं। केवल इंदौर का ही उदाहरण लें तो पिछले कुछ वर्षों में यहाँ कुछ ऐसी घटनाएँ सामने आई हैं जो हमारे सामाजिक ताने-बाने की धज्जियां उड़ाने के लिए काफी हैं। रुपयों की खातिर बेटे ने बाप की और पोते ने संपत्ति की लालसा में दादी की हत्या करवाने की साजिश करने में कोई संकोच नही किया है। महिला मित्र को लेकर या थोड़ी सी नाराजगी के चलते अपनी कक्षा के साथी के अपहरण करने में तथा जिगरी दोस्तों द्वारा अपने ही दोस्त का कत्ल करते हुए उनका हृदय नहीं पसीजा। भूमि हत्याकांड तो आज भी रूह कपा देता है। इन दिनों राज,राजा सोनम की अजीब दास्तां लोगों की जुबान पर बनी हुई है।

बडी अजीब स्थति है कि आज के समय में जब कोई व्यक्ति जीवन मे नैतिक मूल्यों की बात करता है तो लगता है जैसे उसने सतयुग का कोई पौराणिक आख्यान शुरू कर दिया हो। भस्मासुर की कहानी की तरह हमसे ही कहीं गंभीर भूल हो गई लगती है जो हमने संवेदनहीनता का अस्त्र अपने बच्चों के हाथों मे थमा दिया है जिससे लगातार रिश्तों की पवित्रता पर प्रहार हो रहा है। रिश्तों के आत्मीय सूत्र और संवेदनाओं के सेतु मूल्यहीन संस्कारों के चलते क्षत-विक्षत हो चुकें हैं। जो कारण स्पष्ट दिखाई देता है वह परिवार सहित किसी भी ऐसी संस्था के प्रभाव का लगातार कम होते जाना हो सकता है जो प्रारम्भ से ही बच्चों को सरस और सार्थक जीवन जीने की राह दिखाती हो।

एक समय था जब परिवार के बुजुर्ग अपनें बच्चों में करुणा ,प्रेम ,दया,सहयोग,संघर्ष और कर्म के ऐसे बीज बोते रहते थे जो समय आने पर पल्लवित-पुष्पित होकर उनके जीवन को खुशियों से भर देते थे। लेकिन आज ऐसी कला जानने और उसका सार्थक प्रयोग करने वाले पालकों, शिक्षकों, बुजुर्गों की संख्या नगण्य ही रह गई है। ऐसे व्यक्ति बहुत दुर्लभ हो गए हैं जो यह समझा रहे हों कि धैर्य और विवेक मन में शांति की राह आसान बनाते हैं और क्रोध करने से आदमी में उग्रता व बुद्धिहीनता जैसी प्रवर्त्तियाँ अपना सिर उठाने लगतीं हैं। दूसरी ओर शायद बच्चों के पास इतनी समझ और समय भी उपलब्ध नहीं है कि वे जीवन में सुख,शांति और सफलता के इन आउटडेटेड(?) नुस्खों का लाभ ले सकें।

वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि माँ के गर्भ में ही शिशु पर मनोभावों और आसपास के वातावरण का प्रभाव पड़ने लगता है। अभिमन्यु ने माँ के गर्भ के दौरान अपनें जनकों से चक्रव्यूह भेदने की कला को सीख लिया था लेकिन यह विडम्बना ही है कि आज का बच्चा गर्भ में स्वार्थ और अनैतिकता का सबक सीखकर इस संसार में अवतरित होने के लिए अभिशप्त है।एक ओर जहाँ इलेक्ट्रानिक मीडिया के सैंकड़ों चैनल समय से पूर्व बच्चों को मैच्योर बना देने के लिए तैयार बैठे हैं, वहीं दूसरी ओर उपभोक्ता संस्कृति और बाजार के चश्मे के माध्यम से सुख,संमृद्धि और ऐश्वर्य के पाउच शार्टकटों से प्राप्त करने की लालसा ने बच्चों को इतना अधीर और आतुर बना डाला है कि स्वार्थ के खातिर अपने ही शुभचिन्तकों और दोस्तों तक को नुक्सान पहुँचाने में उन्हे कोई गुरेज नहीं होता।

नई पीढ़ी की भाषा में ही कहें तो आज के इन ग्लोबल प्रोडक्टों के भीतर हम शायद संस्कारों और सफलता प्राप्त करने की सही लैंग्वेज का प्रोग्रामिंग नही कर पाए हैं। भाषा में स्वर और व्यंजन दोनों आवश्यक होते हैं। व्यंजन(क,ख,ग़ --) के साथ उचित स्वर(अं,इ उ़ --) को मिलाने के बाद ही अर्थ का उदय होता है । जीवन में आनंद और सुख शांति के व्यंजनों के साथ नैतिक मूल्यों के स्वरों से भी अपने बच्चों को परिचित करवाने की जिम्मेदारी हर स्तर पर हमें उठानी चाहिए तब शायद रिश्तों की पवित्रता की रक्षा की जा सके । जहाँ सही प्रोग्रामिंग हुआ है वहाँ यह समस्या ही नही है।

जरूरत अब इस बात पर गंभीरता से विचार करने की है कि ऐसे प्रोग्रामिंग के लिए असरदार योजना कैसे बन सके ।

बारिश से मौसम में घुली ठंडक, 26 डिग्री पर पहुंचा दिन का तापमान

सतपुड़ा जलाशय के गेट खोलकर पानी किया मेंटेन

बैतूल। मानसून सक्रिय होने से जिले में झमाझम और रिमझिम बारिश का दौर जारी है। गुरूवार भी जिले के कई क्षेत्रों में सुबह से बारिश होते रही। जिससे तापमान में भी गिरावट आई है। दिन का तापमान 26 डिग्री के आसपास पहुंच गया है, वहीं रात का तापमान 22 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने आगामी दो दिनों तक इसी तरह बारिश का अनुमान जताया है। बारिश से शहर के नदी-नालों में भी जलस्तर बढने लगा है। वहीं सारणी

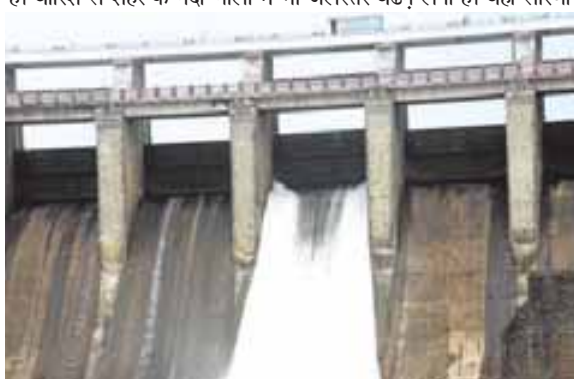

के सतपुड़ा जलाशय में पानी आने से पांच गेट खोलने पड़े। दरअसल जलस्तर ज्यादा होने की वजह से पानी मेंटेन करने डैम के गेटों को खोला गया है। अब एक गेट से 880 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। इधर सुबह तक हुई बारिश के बाद घोड़ाडोंगरी क्षेत्र पट्टन को पीछे छोड़ दिया है। सबसे अधिक बारिश घोड़ाडोंगरी में 142 मिमी दर्ज की गई है। शाहपुर में 129 मिमी और पट्टन में 110 मिमी वर्षा हुई है। बैतूल शहर में पिछले 24 घंटों में मात्र 4.4 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। जिले में वार्षिक औसत वर्षा 1083.9 मिमी की तुलना में अब तक केवल 89.7 मिमी बारिश हुई है। यह पिछले वर्ष की तुलना में 117 मिमी कम है। आगामी महीनों में करीब 1000 मिमी बारिश की आवश्यकता है।

1439.50 फुट पर पहुंचा जल स्तर- सतपुड़ा डैम का जलस्तर 1439.50 फुट पर पहुंच गया है। बांध का लेवल नियंत्रित करने के लिए पहले पांच गेट खोले गए थे। अब एक गेट से 880 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। डेम के पानी को मेंटेन करने के लिए गेट खोले गए हैं। आगे भी बारिश की जैसी भी स्थिति रहेगी उसी हिसाब से जल स्तर को मेंटेन किया जाएगा। भू अभिलेख कार्यालय से जारी बारिश की जानकारी के अनुसार जिले के बैतूल में 32.4 एमएम, घोड़ाडोंगरी 142.0, चिचोली 85.2, शाहपुर 129.0, मुलताई 92.6, प्रभात पट्टन 110.9, आमला 87.0, भैंसदेही 53.0, आठनेर 72.4, भीमपुर 96.0 बारिश हुई है। जिले की औसत बारिश 89.7 एमएम हुई है। पिछले साल 26 जून तक औसत बारिश 117.0 एमएम हुई थी जो कि इस साल कम है।

सड़क हादसे में घायल ने अस्पताल में तोड़ा दम

बैतूल। उज्जैन दर्शन के लिए जा रहे श्रद्धालुओं की टवेरा गाड़ी को 18 जून को देवास और उज्जैन के बीच अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी थी। हादसे में बैतूल बाजार निवासी दादाराव गायकवाड (50) गंभीर रूप से घायल हो गए थे। गुरुवार सुबह बैतूल जिला अस्पताल में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। इस हादसे में उनके ससुर यशवंत राव शिंदे (70) की मौके पर ही मौत हो गई थी। जानकारी के मुताबिक, 18 जून को यशवंत राव शिंदे, दामाद दादाराव और परिवार के सात लोग उज्जैन दर्शन के लिए रवाना हुए थे। रास्ते में देवास-उज्जैन के बीच उनकी टवेरा को सामने से अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि गाड़ी पलट गई। हादसे में यशवंत राव की मौके पर ही मौत हो गई थी। दादाराव समेत छह लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। सभी को पहले उज्जैन अस्पताल ले जाया गया। दो की हालत गंभीर होने पर इंदौर रेफर किया गया। इनमें से रवि आवठे को बाद में भोपाल रेफर किया गया। गंभीर रूप से घायल दादाराव को 26 जून की सुबह बैतूल जिला अस्पताल लाया गया था। इलाज के दौरान गुरुवार सुबह करीब 10 बजे उन्होंने दम तोड़ दिया। हादसे के बाद पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जल, नारीत्व और प्रतीक्षा के माध्यम से एक नृत्य-यात्रा

सदानीरा समागम : भारत भवन के अंतरंग सभागार में प्रस्तुति

भोपाल। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत सदानीरा समागम के अंतिम दिन भारत भवन के अंतरंग सभागार में बिम्बावती देवी द्वारा निर्देशित मणिपुरी शैली में नृत्य नाटिका जीवनम् की प्रस्तुति हुई। जीवनम् संस्कृत के 'जीवन' मूल से लिया गया दो-खंडीय नृत्य अभिनय है, जो स्त्री के माध्यम से इस सार्वभौमिक तत्व् जल की अनुभूति कराता है। यह प्रस्तुति इच्छा, दुःख, बलिदान और आकांक्षा के भावों में स्त्री की उपस्थिति को अनुभव कराती है। इसमें दो नायिकाएँ हैं, दो अवस्थाएँ हैं एक पवित्र नदी के रूप में, दूसरी प्रतीक्षारत पृथ्वी के रूप में।

यमी जिसे हम यमुना के रूप में जानते हैं एक शांत लेकिन भीतर से ज्वालामुखी-सी नायिका है। पौराणिक आख्यानों में वह श्रीकृष्ण की सहगामिनी, एक शांत पृष्ठभूमि मात्र बन जाती है। पर जीवनम् में वह परछाइयों से बाहर आती है अब वह केवल नदी देवी या निष्क्रिय पत्नी नहीं, बल्कि एक स्त्री है जिसमें स्वर है, आँसू हैं, ज्वाला है।

यमुना की कथा सहस्राब्दियों की परतों में लिपटी है वह केवल जलधारा नहीं, स्त्री है। यमी यमराज की जुड़वां बहन। सूर्य से उत्पन्न, तेजस्विनी, परंतु जब उसने अपने ही भाई के प्रति प्रेम की इच्छा की, तो उसकी अग्नि को अपवित्र कहा गया। उसे वर्जना मिली, और वह पाप के बोझ से दब गई। अपने जुड़वां के लिए उसकी लालसा ब्रह्मांडीय नियमों के विरुद्ध थी। उसने मौन साधा, शर्म को पी लिया, और उसके आँसू बनकर एक नदी प्रवाहित हुई।

किंवदंती कहती है कि एक रात, जब वासुदेव नवजात श्रीकृष्ण को लेकर गोकुल की ओर भाग रहे थे, यमुना ने अपना जल दो भागों में बाँट दिया, ताकि वह सुरक्षित निकल सकें। यह उसका पूर्ण समर्पण था प्रेम की वह गहराई, जिसे कोई देख नहीं सका। आगे चलकर वह श्रीकृष्ण के निकट रही, किंतु उसका प्रेम मौन रहा अदृश्य। वह मूक दृष्टा बनी रही, राधा और गोपियों की रासलीला की साक्षी। जबकि राधा को शाश्वत प्रेमिका का स्थान मिला, यमी सदा की साक्षिणी बन गई।

श्रीकृष्ण वृंदावन छोड़कर मथुरा चले गए। उनके पीछे रह गया सन्नाटा। राधा यमुना के तट पर रोईं, और यमुना ने दोनों स्त्रियों का दुःख समेट लिया। दो स्त्रियाँ एक प्रिय, एक अदृश्य समानांतर पीड़ा में बहती रहीं। एक दृश्य में बलराम, मदिरा के प्रभाव में, यमुना से आदेशात्मक स्वर में कहते हैं कि वह उनके पास आए। जब वह इंकार करती है, तो बलराम पृथ्वी पर हल प्रहार करते हैं, और यमुना की धारा बलपूर्वक मोड़ दी जाती है। कुछ ग्रंथों में इसे दिव्य लीला या प्रजनन संस्कार कहा गया है, परंतु जीवनम् में यह वह क्षण है जब धर्म के नाम पर स्त्री पर हिंसा होती है वह स्त्रियाँ जो सदियों से रीति, परंपरा और कामना के नाम पर जोती जाती रहीं, मोड़ी जाती रहीं, झुकाई जाती रहीं।

यमी सूर्य की पुत्री जल की अग्निरूपिणी अपने भीतर जलन, क्रोध, तड़प और प्रेम सब समेटे हुए, आज भी प्रतीक्षारत है। यह नृत्य उसी मौन वेदना का रूपांतरण है। उसका शरीर, नदी की भाँति बहता है, उसकी चुप्पी, लय, मुद्राओं और निःशब्द भंगिमाओं में स्वर पकड़ती है। यह प्रेरणा जयदेव के गीत गोविंद के उस कम चर्चित खंड से ली गई है, जिसमें 'यमी हे' का आर्तनाद गूंजता है। और फिर दृश्यांतरण होता है। नदी से रेगिस्तान की ओर, मिथक से प्रतीक की ओर। अब मंच पर एक और स्त्री है जिसका नाम नहीं, चेहरा नहीं पर जिसकी आत्मा प्यासी है। वह स्त्री पृथ्वी है सूखी, प्रतीक्षारत, जल के लिए, प्रेम के लिए, पुनर्जन्म के लिए। वारी वर्षा की आकांक्षा उसका आलंब बनती है। वह हर दिन आकाश की ओर देखती है, हवा की सरसराहटों में वर्षा का संकेत खोजती है। उसकी प्रार्थनाएँ उत्सव नहीं हैं, वे जल के लिए आर्त पुकार हैं। उसकी त्वचा सूख चुकी है, पर भीतर एक गर्भ है जो भीगने की प्रतीक्षा में है।

वह स्त्री स्वयं पृथ्वी बन जाती है उसकी आत्मा धरती बन जाती है। और जब वर्षा आती है पहले हल्की, फिर मूसलधार वह केवल भीगती नहीं, पुनर्जाग्रत होती है। उसके भीतर फिर से हरियाली उगती है, वह फिर से जीवन बन जाती है। वह जल से एक हो जाती है। वह जीवनम् है।

यह प्रस्तुति केवल यमुना या वर्षा की कथा नहीं है। यह उन स्त्रियों की कथा है जो तत्व बन जाती हैं। वे स्त्रियाँ जो नदियाँ हैं, जो वर्षा हैं, जो प्रतीक्षा हैं जिन्हें विस्मृत किया गया, तोड़ा गया, मोड़ा गया, पर फिर भी जो देती रहीं, बहती रहीं, जीवन को रूपांतरित करती रहीं।

यमी हे और वारी के माध्यम से यह संपूर्ण प्रस्तुति एक प्रार्थना बन जाती है जल के पौराणिक और भावनात्मक परिदृश्य में स्त्री की मौन, गहन और अनसुनी उपस्थिति की पुनर्प्राप्ति। यह नृत्य, पीड़ा की पवित्रता, मौन की शक्ति और स्त्रीत्व के समर्पण का जश्न है।

ताप्ती जल प्रवाह क्षेत्र में अतिक्रमण को लेकर प्रशासन गंभीर

तहसील न्यायालय से 17 को मिले नोटिस, 10 ने प्रस्तुत किए जवाब

बैतूल/मुलताई। ताप्ती जल मार्ग एवं प्रवाह क्षेत्र में अतिक्रमण एवं रिकॉर्ड हेराफेरी की शिकायत के बाद आरआई एवं पटवारी की सीमांकन रिपोर्ट के आधार पर तहसीलदार अलका इक्का ने 17 लोगों को कारण बताओ नोटिस जारी किए है, जिसमें से 10 लोगों ने अपने जवाब तहसीलदार न्यायालय में प्रस्तुत कर दिए हैं। ताप्ती जलमार्गों पर अतिक्रमण एवं रिकॉर्ड में बदलाव की शिकायत नई बात नहीं है। किंतु प्रमाणित होने के बाद भी अनेक वर्षों से अतिक्रमण करने वालों पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है। इस बार ताप्ती से जुड़े मामले में प्रशासन गंभीर दिखाई दे रहा है। अब यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि वर्तमान ताप्ती जल मार्ग क्षेत्र के 17 एवं स्टेशन रोड के10 अतिक्रमण मामलों का निराकरण क्या हो पता है। सूत्र बताते हैं कि ताप्ती से जुड़े अतिक्रमण को लेकर जिला कलेक्टर भी गंभीर है। इससे ताप्ती श्री क्षेत्र के अतिक्रमण मुक्त होने की संभावनाएं बढ़ जाती है। अतिक्रमण के नए 17 मामलों में भी जुलाई माह मे फैसला हो सकता है।

इन लोगों को भेजे गए हैं कारण बताओं नोटिस- उषा वासुदेव, सत्यनारायण मंदिर ट्रस्ट सौरभ कुमार ,लक्ष्मण प्रसाद, किरण देवी लख्मीचंद ,कुसुमा देवी संतोष, आशा देवी पुरुषोत्तम, साधना मुरलीधर, संतोष कुमार सूरजमल, पुरुषोत्तम सूरजमल ,लक्ष्मी चंद सूरजमल, मुरलीधर मंगल प्रसाद, मोतीडास नानक दास, किशन दास नानक दास, हनुमान दास नानक दास, नानक दास लक्ष्मण दास आदि प्रमुख है।

ताप्ती विकास प्राधिकरण समिति ने की थी शिकायत- उक्त अतिक्रमण मामले में ताप्ती विकास प्राधिकरण समिति ने जिला कलेक्टर और अनुभागीय अधिकारी मुलताई को पत्र लिखकर ताप्ती नदी के प्रवाह क्षेत्र में अतिक्रमण और रिकॉर्ड में हेरफेर का मुद्दा उठाया था। पत्र में कहा गया है कि मां ताप्ती नदी के उद्गम स्थल कुंड से निकलने वाली नदी का प्रवाह क्षेत्र अन्य व्यक्तियों के नाम पर चढ़ा दिया गया है और नदी का प्रवाह बाधित कर दिया गया है।नदी का प्रवाह बाधित होने से ताप्ती कुंड का पानी बारिश में कुंड के ऊपर से बहता है, जिससे प्राचीन मंदिरों और कुंडों में पानी भर जाता है, और ताप्ती जी के तालाब में दरारें आ गई हैं, जिससे जनहानि का खतरा है।

1954-55 के अधिकार अभिलेख मे दर्ज था ताप्ती का नाम- समिति ने अपने शिकायत में बताया है की 1954-55 के अधिकार अभिलेख में ताप्ती नदी के बटांकन का उल्लेख है, जिसमें 242/1, 242/2, और 242/3 खसरा नंबरों पर ताप्ती नदी का जिक्र है ।यह भी बताया गया है कि 1972-73 के अधिकार अभिलेख के अनुसार खसरा नंबर 240, 242/3 को 560 नंबर में दर्ज किया गया है, जिससे नदी के प्रवाह में बाधा आ रही है।

इनका कहना है -

शिकायत के बाद आरआई ,पटवारी की रिपोर्ट के आधार पर 17 लोगों को कारण बताओं नोटिस जारी किए गए हैं ।जिसमें से 10 लोगों ने अपना जवाब प्रस्तुत किया है । अतिक्रमण के संबंध में राजस्व अधिनियम की अपनी प्रक्रिया है जिसके तहत कार्रवाई हो रही है।

- अलका इक्का, तहसीलदार मुलताई

कलश यात्रा के साथ प्रारंभ हुई मां ताप्ती महिमा कथा

125 ग्रामों में पहुंचेंगे मां ताप्ती जल कलश

बैतूल/मुलताई। ताप्ती जन्मोत्सव के अवसर पर ताप्ती तट पर प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली मां ताप्ती महिमा कथा का प्रारंभ कलश यात्रा के साथ हुआ। ताप्ती तट पर स्थित गायत्री मंदिर से निकाली गई कलश यात्रा का प्रारंभ ताप्ती महिमा कथावाचक वैष्णवाचार्य डॉ से कलश यात्रा से प्रारंभ हुई यह ताप्ती कथा 1 जुलाई को समाप्त होगी और 2 जुलाई को सप्त ऋषि टापू पर यज्ञ एवं भंडारा प्रसादी के साथ इसका संपूर्ण समापन किया जाएगा।

मेरा गांव, मेरा तीर्थ हर घर पहुंचेगा पवित्र ताप्ती जल- सूर्यपुत्री मां

विश्वामित्र शरण गोवर्धन मथुरा ने कलश पालकी पूजन से किया। इसके साथ ही सूर्य पुत्री मां ताप्ती तीर्थ क्षेत्र न्यास के तत्वाधान में प्रतिवर्ष 125 ग्रामों में आयोजित होने वाले ताप्ती जन्मोत्सव का प्रारंभ राम मंदिर में कलश पूजन के साथ हुआ। मां ताप्ती महिमा कथा प्रचार समिति मुलतापी प्रमुख लोकेश यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि ताप्ती महिमा कथा ताप्ती तट पर वैष्णवाचार्य डॉ विश्वामित्र शरण महाराज के मुखारविंद से 26 से अधिक वर्षों से गायत्री मंदिर परिसर में हो रही है इस कथा का उद्देश्य मां ताप्ती की महिमा को घर-घर तक पहुंचना है। आज गुरुवार ताप्ती तीर्थ क्षेत्र न्यास द्वारा साप्ताहिक ताप्ती जन्मोत्सव के तहत ताप्ती जल कलश की स्थापना की गई । यह कलश मुलताई क्षेत्र के 125 ग्रामों में पहुंचाए जाएंगे और प्रत्येक ग्राम में ताप्ती जल मंदिरों में पहुंचेगा जहां मंदिरों में अभिषेक एवं ध्वजारोहण भी किया जाएगा । ग्रामीण क्षेत्रों में भेजे जाने वाले ताप्ती कलशो का आज राम मंदिर में पूजन किया गया ।पूजन कार्य में वैष्णवाचार्य डॉक्टर विश्वामित्र नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गड़ेकर, भाजपा नेता नमन अग्रवाल, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष हेमंत शर्मा, राजेंद्र सिंह ठाकुर, पार्षद पिल्लू जैन आदि उपस्थित थे।

एमसीयू में जनसंपर्क अधिकारियों की प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन

भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक जनसंपर्क अधिकारियों के पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल समापन हुआ। इस अवसर पर कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि

'अतः अस्ति आरंभ' हर अंत एक नई शुरुआत की ओर अग्रसर करता है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामनाएं दीं और उन्हें प्रोत्साहित करते हुए लेखक जिम कॉर्बेट की पुस्तक 'मेरा हिंदुस्तान' पढ़ने की सलाह दी।

जनसंपर्क विभाग के अपर संचालक जी.एस. वाधवा ने अपने संबोधन में लेखन शक्ति को बढ़ाने पर बल देते हुए कहा कि आपका नेटवर्क जितना व्यापक होगा, आपका कार्यक्षेत्र उतना ही प्रभावी और सशक्त होगा। उन्होंने जिला स्तर पर सूचना का अग्रिम केंद्र बनने और स्थानीय समुदाय से सीधे जुड़ाव बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया।

समापन सत्र में वरिष्ठ पत्रकार अजीत ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए डाक युग से लेकर ईमेल और डिजिटल संचार के वर्तमान स्वरूप तक की यात्रा का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जनसंपर्क अधिकारी होने के नाते प्रत्येक अधिकारी को अपने भीतर के पत्रकार को हमेशा जागृत रखना चाहिए। लेखन शैली को रचनात्मक और आकर्षक बनाते हुए खबरों को रोचक बनाना चाहिए। उन्होंने भाषा को सरल बनाए रखने और मानक शब्दावली के प्रयोग पर भी जोर दिया।

वरिष्ठ पत्रकार अनिल तिवारी ने प्रतिभागियों को पत्रकारों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने, शासन की गतिविधियों पर सूक्ष्म नजर रखने और जनता तक सटीक एवं पूर्ण जानकारी पहुँचाने के दायित्व को सर्वोपरि बताया।

कार्यक्रम के अंत में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अविनाश वाजपेयी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनसंपर्क अधिकारियों का यह प्रशिक्षण न केवल एक ज्ञानवर्धक मंच सिद्ध हुआ, बल्कि उनके भीतर नेतृत्व, संवाद और प्रभावी संप्रेषण की नई ऊर्जा का संचार भी करता दिखाई दिया।

इस प्रशिक्षण में सहायक जनसंपर्क अधिकारियों को संचार और जनसंपर्क के विविध पहलुओं से अवगत कराया गया। विभिन्न क्षेत्रों से आमंत्रित विशेषज्ञों और अनुभवी जनसंपर्क अधिकारियों ने अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। प्रशिक्षण सत्रों ने प्रतिभागियों को न केवल व्यावहारिक समझ दी, बल्कि उन्हें प्रेरित भी किया कि वे अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन प्रभावशाली ढंग से कर सकें।

जेएच कॉलेज में नशा निवारण दिवस पर ली गई नशा मुक्ति की शपथ

प्रधान न्यायाधीश शिवबालक साहू ने युवाओं को किया जागरूक

बैतूल। मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार 01 जून से 26 जून 2025 तक चलाए गए नशा मुक्त अभियान के तहत अंतरराष्ट्रीय नशा निवारण दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानंद सभागृह, शासकीय जे एच स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैतूल में एक प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग बैतूल द्वारा किया गया, जिसमें जिले की प्रमुख शासकीय व अशासकीय संस्थाओं की सहभागिता रही। इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग की एएनएम और जयगुरुदेव संस्था के युवाओं ने प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी। नाटक में नशे के दुष्परिणामों को जीवंत अभिनय के जरिए दिखाया गया, जिसे देखकर दर्शक भावुक हो उठे। प्रदर्शन के माध्यम से युवाओं को नशे से दूर रहने और समाज को जागरूक करने की प्रेरणा दी गई।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुटुंब न्यायालय बैतूल के प्रधान न्यायाधीश शिवबालक साहू रहे, वहीं वरिष्ठ न्यायाधीश श्रीमति शर्मिला शियावार, विधिक सेवा प्राधिकरण के श्री सोमनाथ राय, सामाजिक न्याय विभाग की उपसंचालक सुश्री रोशनी वर्मा, जेएच कॉलेज से डॉ. सुखदेव डोंगरे एवं प्राध्यापक शंकर सातनकर उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ. सुखदेव डोंगरे ने युवाओं से नशा मुक्त समाज की दिशा में निरंतर अभियान चलाने का आह्वान किया। शंकर सातनकर ने नशे के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान सभी उपस्थितजनों ने नशा मुक्त रहने की सामूहिक शपथ ली। प्रजापिता ब्रह्मकुमारी आश्रम की सविता बहन, गायत्री परिवार से रविशंकर पारखे, नवोदित ग्राम उत्थान समिति चोपना, संस्कार ग्राम उत्थान समिति असाड़ी चिचोली, जयगुरुदेव संस्था बैतूल, नेहरू युवा केन्द्र बैतूल, जन अभियान परिषद एवं स्वास्थ्य विभाग के प्रतिनिधि भी बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. डॉ. अजय सिंह ने केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल से की औपचारिक भेंट

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में संस्थान स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में निरंतर उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। इसी क्रम में आज प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने भारत सरकार की केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल से सौजन्य भेंट की। प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने मंत्री महोदया के भोपाल आगमन पर उनका आत्मीय स्वागत किया और संस्थान द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए किए जा रहे कार्यों एवं भावी योजनाओं पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने एम्स भोपाल में संचालित प्रमुख स्वास्थ्य कार्यक्रमों, नई चिकित्सा सुविधाओं, अनुसंधान पहलों तथा नवाचारों की जानकारी दी

और जनस्वास्थ्य के प्रति संस्थान की गहरी प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने एम्स भोपाल की सेवाओं और नवाचारों की सराहना करते हुए कहा कि संस्थान का कार्य देश की स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूती प्रदान करने में अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने मंत्रालय की ओर से भविष्य में हरसंभव सहयोग का आश्वासन भी दिया। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, एम्स भोपाल जनस्वास्थ्य सेवा में उत्कृष्टता प्राप्त करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल जी से हुई यह मुलाकात हमारे लिए अपनी उपलब्धियों और आगामी योजनाओं को साझा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर रही।

एम्स भोपाल में अंतरराष्ट्रीय मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध तस्करी निरोध दिवस पर जागरूकता अभियान आयोजित

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, 26 जून को अंतरराष्ट्रीय मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध तस्करी निरोध दिवस के अवसर पर संस्थान में एक जनजागरूकता अभियान का आयोजन किया। इस जनजागरूकता अभियान का मुख्य उद्देश्य युवाओं और बच्चों को नशे की लत से दूर रखना, नशे के कारण होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दुष्परिणामों के प्रति उन्हें जागरूक बनाना तथा नशामुक्त एवं स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करना था। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा घोषित यह दिवस हर वर्ष दुनियाभर में मादक दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के विरुद्ध वैश्विक एकजुटता एवं प्रयासों का प्रतीक है। अभियान के अंतर्गत जनजागरूकता रैली, पोस्टर प्रदर्शन, संवाद सत्र, और विद्यार्थियों की सहभागिता से विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

सोयाबीन की बेहतर फसल के लिए केंद्रीय मंत्री शिवराज की उपस्थिति में इंदौर में हुआ मंथन

पीएम मोदी की प्रेरणा से देश के छोटे किसानों के कल्याण की ईमानदार कोशिश : शिवराज

इंदौर/नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह ने आज इंदौर (मध्य प्रदेश) में भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के वैज्ञानिकों, किसानों, कृषि विश्वविद्यालयों के पदाधिकारियों, कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) के विशेषज्ञों, प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्यों के वरिष्ठ अधिकारियों, केंद्रीय कृषि सचिव, आईसीएआर के डीजी सहित केंद्र के आला अफसरों, सोया उद्योग प्रतिनिधियों के साथ सोयाबीन की बेहतर फसल के लिए व्यापक मंथन किया।

सोयाबीन हितग्राहियों से संवाद में शिवराज सिंह ने कहा कि बहुत उपयोगी चर्चा हुई है। ये कर्मकांड नहीं, बल्कि किसानों के कल्याण की ईमानदार कोशिश है। ब्राजील, यूएसए में 10-15 हजार हेक्टेयर के फार्म होते हैं, हमारे यहां अधिकांश किसानों के पास एक, दो, पांच एकड़ के खेत हैं, इसलिए यहां खेती कठिन है। खेती भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, किसान उसकी आत्मा है। मैं जबसे कृषि मंत्री बना हूं, तबसे मुझे खेती-किसानी के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता। दिल्ली में आईसीएआर के कैंपस में हम दिनभर बैठकर बेहतर करने की कोशिश करते रहते हैं, इसी में से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की प्रेरणा से विचार आया। जब नई बीज किस्में रिलीज करने की बात मैंने प्रधानमंत्री जी से कही, तो उन्होंने कहा था कि हम कार्यक्रम खेत में करेंगे, ताकि किसानों के बीच बात जाएं।

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि खेती की जवाबदारी जिन पर हैं, वो अलग-अलग दिशा में काम कर रहे थे। हमारे पास 16 हजार वैज्ञानिक हैं, हमारे पास टैलेंट, क्षमता और बुद्धि है, लेकिन वो लैब में बैठे हैं। रिसर्च का फायदा तो हुआ, लेकिन किसान खेत में बैठा है। वो खेत में खेती कर रहा है, लैब और लैंड मिलते नहीं थे। ऐसे में मेरे मन

में आया कि लैब से लैंड को जोड़ दिया जाएं। खेती की एक टीम बने, सबसे पहले किसान, कृषि वैज्ञानिक, राज्य और केंद्र सरकार के अधिकारी, इसके साथ स्टैकहोल्डर्स, ये मिलकर काम करेंगे तो अच्छे परिणाम आएंगे, इसीलिए विकसित कृषि संकल्प अभियान प्रारंभ हुआ, जिसमें 2170 टीमें गांव-गांव गई, किसानों से संवाद किया। वहां कोई रैली या सभा नहीं थी, इसमें से कई चीजें निकलकर सामने आईं। 300 से ज्यादा इनोवेशन तो किसानों ने कर दिए, वैज्ञानिक उनसे सीखकर आएं। जैसे लीची की शेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए उस पर ग्लूकोस का घोल चढ़ा दिया, ऐसी कई चीजें वैज्ञानिकों ने सीखीं।

शिवराज सिंह ने कहा कि जिस चीज की जरूरत है, उस चीज की रिसर्च हो, अब रिसर्च किसान भाइयों के खेत से तय होगी, न कि दिल्ली से। इस बीच उन्नत बीज की समस्या सामने आई, बीज की पहचान कैसे करें। प्राइवेट कंपनी से लिया, बोया, खराब निकला। अब कार्रवाई भी हो जाएं तो क्या मतलब। इसलिए, रिसर्च अब किसानों की समस्या देखकर होगी। जो समस्या आई हैं, उनका समाधान वैज्ञानिक सुझाएंगे। अधिकारी उन समाधान को किसानों के बीच ले जाएंगे। वन नेशन-वन एग्रीकल्चर-वन टीम के मंत्र के साथ हम आगे चलेंगे। उन्होंने कहा कि आज ऐसे बीज की वैरायटी की बात आई है, जो सूखे में भी टिक जाएं और ज्यादा पानी आ जाएं तो भी टिक जाएं। येलो मोजाइक फसल दो दिन में तबाह कर देता है। जीनोम एडिटिंग पद्धति का अब हम इस्तेमाल करेंगे।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि एक बात आई है अमानक स्तर की पेस्टिसाइड व खाद की, जिस पर उन्होंने आश्वस्त किया कि अमानक स्तर के बीज व पेस्टिसाइड बनाने वालों को छोड़ा नहीं जाएगा। किसान पहचान कर लें, इसके लिए उपकरण भी तैयार करना होगा। शिवराज सिंह ने कहा कि हमें सोयाबीन की ईल्ड बढ़ाना है। जैसी योजना चल रही है, वो चले लेकिन किसान को लाभ देने के लिए हम योजना बदलेंगे। उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा प्रोटीन सोयाबीन में है, तेल का कंटेंट सिर्फ 18 प्रतिशत है, इसका हम उपयोग नहीं कर पाते हैं।

केंद्रीय मंत्री उइके बोले-

जनता तक हर योजना का लाभ पहुंचे

हरदा (नप्र)। हरदा में जिला पंचायत सभागृह में केंद्रीय मंत्री डीडी उइके ने गुरुवार को दिशा समिति की बैठक ली। तीन घंटे की इस बैठक में उन्होंने अधिकारियों के साथ केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं की समीक्षा की।

उन्होंने बताया कि बैठक में अधिकारियों ने अपना पक्ष रखा, जहां कमियां हैं उन्हें सही करने कह है। हर योजना का 100 प्रतिशत रिजल्ट मिले, ऐसा अधिकारियों को निर्देशित किया है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि विभागवार समीक्षा में पुस्तक कुछ और कहती है और मौके पर स्थिति कुछ और होती है। उन्होंने अधिकारियों से सभी काम समय सीमा में, गुणवत्ता के साथ पूरे करने कहा।

बैठक में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सड़क निर्माण कार्यों की स्पॉट जांच के निर्देश दिए गए। जल जीवन मिशन के तहत ग्रामीण क्षेत्र में पेयजल योजनाएं पूर्ण होने के बाद ही पंचायत को हस्तांतरित करने को कहा गया। पेयजल पाइप लाइन से खुदी सड़कों की तत्काल मरम्मत के आदेश दिए गए।

मनरेगा में समय पर मजदूरी भुगतान और ग्रामीण व शहरी पीएम आवास योजना में 100 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति पर जोर दिया गया। आयुष्मान कार्ड पंजीयन के लिए नेटवर्क की समस्या वाले गांवों के लोगों को विशेष शिविर में लाकर पंजीयन कराने के निर्देश दिए गए।

बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष गजेन्द्र शाह, नगर पालिका अध्यक्ष भारती कमेड़िया, कलेक्टर सिद्धार्थ जैन, एसपी अभिनव चौकसे, जिला पंचायत सीईओ सविता झानिया सहित अन्य अधिकारी और जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

खिरकिया अध्यक्ष नहीं पहुंचीं- दिशा की बैठक में हरदा, टिमरनी, सिराली के नपाध्यक्ष मौजूद रहे, जबकि खिरकिया नगर परिषद की अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह खनूजा बैठक में उपस्थित नही रही। उन्होंने अपने पति महेंद्र सिंह खनूजा के साथ सर्किट हाउस में मंत्री ऊईके के आगमन पर स्वागत किया।

बताया जा रहा है कि खिरकिया नगर परिषद में पार्षदों ओर अध्यक्ष के बीच काफी समय से चल रहा शीत युद्ध अब काफी बढ़ गया है। सूत्रों की माने तो नगर परिषद के उपाध्यक्ष सहित 10 भाजपा पार्षदों ने अध्यक्ष खूनजा के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने का मन बना लिया है। जिसके सर्किट हाउस में संभाग प्रभारी पंकज जोशी एवं भाजपा जिलाध्यक्ष राजेश वर्मा ने खिरकिया नगर परिषद के नाराज पार्षदों एवं अध्यक्ष से वन टु वन कर तालमेल बनाने का प्रयास किया है। अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव को लेकर कोई भी पार्षद या अध्यक्ष पार्टी गाइड लाइन के चलते मीडिया के सामने नहीं आया है।

पटरी पर बैठी महिलाएं, घंटे भर रूका ट्रेन का इंजन

रेलवे क्रॉसिंग वाला रास्ता बंद करने का विरोध लोग बोले- घूमकर जाने में होगी समस्या

सतना (नप्र)। सतना में महिलाएं रेलवे ट्रैक पर बैठ गईं। उन्होंने यहां नारेबाजी की। उनकी वजह से 1 घंटे तक ट्रेन का इंजन नहीं निकल पाया। पुलिस वहां पहुंची तो लोगों को समझाइश देकर वहां से हटाया। मारुति नगर से होकर जाने वाले रेलवे क्रॉसिंग पर बिरला फैक्ट्री प्रबंधन ने रेलवे ट्रैक के दोनों ओर गड्ढा खोदकर स्लीपर लगाकर आम रास्ता बंद कर दिया। स्थानीय नागरिकों ने गुरुवार को विरोध किया। उनका कहना

था कि वहां से लोग रोज आना-जाना करते हैं। रास्ता बंद करने की वजह से उन्हें निकलने में परेशानी का सामना करना पड़ेगा, इसलिए रास्ता चालू रखा जाए। इधर, बुधवार को ही यहां पर एक कार से मालगाड़ी की इंजन टकराया था। कार में बैठा परिवार बाल-बाल बचा था।

लोग बोल- सालों पुराना है रास्ता- विरोध कर रहे लोगों ने बताया कि यह रास्ता कई दशक पुराना है। लगभग 5 हजार लोग यहां से रोज आना-जाना करते हैं। बिरला फैक्ट्री प्रबंधन और स्थानीय लोगों के बीच इस मार्ग को लेकर वर्षों से विवाद चल रहा है। हंगामे को बढ़ता देख फैक्ट्री प्रबंधन के कर्मचारी मौके से चले गए।

आरपीएफ और कोलगवां थाना पुलिस की टीम ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को शांत किया। स्थानीय निवासियों का कहना है कि रास्ता बंद होने से हजारों लोगों को स्कूल, अस्पताल और कामकाज के लिए लंबा चक्कर लगाना पड़ेगा। उन्होंने प्रशासन से इस रास्ते को चालू रखने की मांग की है। लोगों को हटाने के लिए आरपीएफ पुलिस पहुंची। इस पर स्थानीय लोगों ने उन्हें समस्या बताई।

ग्वालियर से बैंगलोर के लिये नई रेल सेवा का हुआ शुभारंभ

उद्योग, रोजगार का नया हब बनेगा ग्वालियर-चंबल : सीएम डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ग्वालियर-चंबल अंचल को एक बड़ी ट्रेन सुविधा उपलब्ध हुई है। अब अंचल के लोग ग्वालियर से ट्रेन द्वारा सीधे बैंगलोर पहुँच सकेंगे। युवाओं के लिये यह विशेष तौर पर तोहफा है। साप्ताहिक ग्वालियर-बैंगलोर ट्रेन सुविधा से आईटी के क्षेत्र में अध्ययन कर रहे छात्र-छात्राओं को विशेष लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जबलपुर से गुरुवार को ग्वालियर से बैंगलोर नई ट्रेन सुविधा का वर्चुअल शुभारंभ किया। कार्यक्रम से केन्द्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव भी वर्चुअली जुड़े। ग्वालियर में आयोजित समारोह में केन्द्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह सहित वरिष्ठ जनप्रतिनिधि एवं रेलवे के अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत सरकार से मध्यप्रदेश को रेल सुविधाओं के क्षेत्र में अनेक सौगातें मिली हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने रेलवे के क्षेत्र में विकास के कई आयाम छुए हैं। प्रदेश के लगभग 80 रेलवे स्टेशनों जिसमें ग्वालियर भी शामिल है, का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व. माधवराव सिंधिया के समय से ग्वालियर-अंचल को रेल सुविधाओं का जो सिलसिला प्रारंभ हुआ है, उसी कड़ी में आज ग्वालियर से बैंगलोर के लिये नई ट्रेन सुविधा मिली है।

ग्वालियर-चंबल बनेगा उद्योग एवं रोजगार हब- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अटल जी के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार के संयुक्त प्रयास से ग्वालियर-चंबल अंचल में

रोजगार, उद्योग और शिक्षा के क्षेत्र में भी नए आयाम स्थापित किए जा रहे हैं। आने वाले दिनों में ग्वालियर-चंबल संभाग उद्योग और रोजगार का नया हब बनेगा। युवाओं को उद्योगों के माध्यम से रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे। ग्वालियर और मालवा अंचल को रेल सुविधा, हवाई सुविधा के माध्यम से भी जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने ग्वालियर को नई रेल सुविधा की सौगात देने के लिये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया है।

केन्द्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि ग्वालियर-चंबल अंचल के लिये ग्वालियर से बैंगलोर चलने वाली ट्रेन बड़ी सौगात है। इस ट्रेन के शुरू होने से ग्वालियर-चंबल संभाग के ऐसे युवा जो आईटी के क्षेत्र में अध्ययन कर रहे हैं उन्हें सीधे बैंगलोर पहुँचने की बेहतर सुविधा प्राप्त होगी। केन्द्रीय मंत्री श्री वैष्णव ने कहा कि रेलवे के क्षेत्र में विकास के मामले में मध्यप्रदेश के लिये अनेक कार्य स्वीकृत किए गए हैं। पिछले वर्ष में ही 24 हजार करोड़ रूपए से अधिक के प्रोजेक्ट मध्यप्रदेश को प्रदान किए गए हैं। प्रदेश के 80 से अधिक रेलवे स्टेशनों का जीर्णोद्धार और फ्लाईओवर निर्माण का कार्य भी किया जा रहा है। केन्द्रीय मंत्री श्री वैष्णव ने कहा कि ग्वालियर से आगरा के मध्य भी पैसेंजर ट्रेन संचालित करने पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि उज्जैन में सिंहस्थ में श्रद्धालुओं को उज्जैन तक पहुँचाने के लिये भी रेल मंत्रालय सार्थक प्रयास करेगा।

केन्द्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि ग्वालियर के लिये आज ऐतिहासिक दिन है। ग्वालियर को दक्षिण से जोड़ने के लिये नई रेल सुविधा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने स्वीकृत की है। ट्रेन के प्रारंभ होने से ग्वालियर-चंबल संभाग के हजारों हजार लोगों को अब सीधे बैंगलोर पहुँचने के लिये परेशानी नहीं होगी। उन्होंने कहा कि बैंगलोर रेलवे स्टेशन महान इंजीनियर श्री विश्वेश्वरैया के नाम पर है। यह सौभाग्य की बात है कि ग्वालियर की प्यास बुझाने वाले तिघरा डैम की डिजाइन भी महान इंजीनियर श्री विश्वेश्वरैया ने तैयार की थी, उनके द्वारा तैयार किया गया डैम आज भी ग्वालियर वासियों की प्यास बुझा रहा है। केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने कहा कि नई रेल सुविधा से न केवल ग्वालियर बल्कि शिवपुरी, गुना, अशोकनगर के लगभग 40 लाख नागरिकों को सुविधा उपलब्ध होगी। आने वाले दिनों में ग्वालियर को रेल मार्ग से कोटा से जोड़ने का कार्य भी किया जायेगा। विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि ग्वालियर को बड़ी सौगात मिली है। मध्यप्रदेश में 80 रेलवे स्टेशनों का जीर्णोद्धार कार्य में ग्वालियर का रेलवे स्टेशन भी शामिल है। ग्वालियर रेलवे स्टेशन का 482 करोड़ रूपए की लागत से जीर्णोद्धार होने पर ग्वालियर-अंचल को एक व्यवस्थित और भव्य रेलवे स्टेशन भी उपलब्ध होगा। विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने कहा कि ग्वालियर से इटावा के लिये भी नई रेल सुविधायें उपलब्ध कराने का कार्य किया जाना चाहिए, ताकि ग्वालियर लखनऊ से सीधे जुड़ सके।

ग्वालियर में होगी कैबिनेट बैठक

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्व. राजमाता विजयाराजे सिंधिया की कर्मभूमि और अटल जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर उनके सम्मान में ग्वालियर में शीघ्र ही कैबिनेट बैठक का आयोजन किया जाएगा।

बिजली गिरने से भाइयों की मौत, दो किसान झुलसे

जबलपुर-विदिशा में घरों में घुसा पानी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में तेज बारिश का दौर गुरुवार को भी जारी रहा। इंदौर में दोपहर में ही काले घने बादल छा गए और तेज बारिश होने लगी। गाड़ियों की लाइट जलानी पड़ी। विदिशा और जबलपुर में भारी बारिश से कई इलाकों में पानी भर गया। इंदौर में दिन में ही अंधेरा छा गया। तेज बारिश में गाड़ियों की हेडलाइट जलानी पड़ी।

आगर मालवा के लोलकी गांव में गुरुवार दोपहर करीब 3 बजे चार युवकों पर बिजली गिर गई। हादसे में दो मौसेरे भाइयों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो किसान झुलस गए। मृतकों की पहचान 33 वर्षीय कमल सिंह और 30 वर्षीय लखन उर्फ लक्ष्मण सिंह के रूप में हुई। 25 वर्षीय मान सिंह और 25 वर्षीय विशाल पाटीदार झुलस गए हैं।

विदिशा में थोड़ी देर हुई बारिश से निचले इलाकों में पानी भर गया। जबलपुर में भी कई जगह घरों में पानी घुस गया। सतना में कलेक्ट्रेट रोड पर एक पेड़ पर बिजली गिरने का वीडियो सामने आया है। इधर, रायसेन के बेगमगंज में भारी बारिश से कच्चा मकान गिर गया। परिवार के पांच लोग मलबे में दब गए। लोगों ने तुरंत सभी को बाहर निकाला। दंपती और तीन बच्चे अस्पताल में भर्ती हैं। बेगमगंज का सुल्तानपुर रोड बंद होने से 50 गांवों का शहर से संपर्क टूट गया है। प्रदेश में भारी बारिश का अलर्ट है। बालाघाट-आलीराजपुर में 24 घंटे में 8 इंच तक बारिश हो सकती है। मौसम विभाग ने कुल 15 जिलों में भारी बारिश की संभावना जताई है।

मांडू में 5 घंटे में डेढ़ इंच बारिश, धुंध छाई- मांडू में गुरुवार को 5 घंटे में डेढ़ इंच बारिश हुई। यहां अधिकतम तापमान 28.3 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 23.5 डिग्री दर्ज किया गया। रानी रूपमती के महल पास धुंध छाई रही।

रतलाम में शाम को मौसम बदला, बारिश हुई- रतलाम में गुरुवार सुबह से मौसम खुला रहा, धूप भी निकली। शाम 4 बजे बाद बारिश होने लगी।

खंडवा में सुबह उमस, दोपहर में तेज बारिश- खंडवा में गुरुवार दोपहर तक उमस रही। इसके बाद तेज बारिश होने लगी। इस बारिश ने समय से पहले बोवनी कर चुके किसानों को राहत दिलाई हैं। इधर, मोरटक्का और आसपास के क्षेत्र में मानसून की पहली बरसात हुई हैं।

इंदौर में तेज बारिश, दोपहर में छाया अंधेरा- इंदौर के पश्चिम क्षेत्र में तेज बारिश। काले बादलों की वजह से दोपहर में ही छाया अंधेरा। लोगों को अपने गाड़ियों की लाइट चालू करना पड़ी।

छिंदवाड़ा में 2 घंटे भारी बारिश- छिंदवाड़ा में आज दोपहर करीब 2 घंटे तेज बारिश हुई। इससे शहर के निचले इलाकों में जलभराव हो गया।

धार के पीथमपुर में तेज बारिश- धार जिले के पीथमपुर में दोपहर 2 बजे के बाद तेज बारिश शुरू हो गई। यहां 1 जून से अब तक कुल 99 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है। 26 जून को कुल 4 मिलीमीटर बारिश हुई है।

रायसेन में सुल्तानपुर रोड बंद हुआ- रायसेन के बेगमगंज का सुल्तानपुर रोड बंद हो गया है, जिससे 50 गांवों का शहर से संपर्क टूट गया है। पानी के तेज बहाव के कारण पुल की मिट्टी बह गई है। यहां पुलिस तैनात की गई है।

रायसेन में कच्चा मकान गिरा, दंपती-तीन बच्चे घायल- रायसेन जिले में बेगमगंज के ग्राम वीरपुर में भारी बारिश से एक कच्चा मकान गिर गया। परिवार के पांच लोग मलबे में दब गए। लोगों ने तुरंत सभी को मलबे से बाहर निकाला। कैलाश अहिरवार, उसकी पत्नी और तीन बच्चे घायल हैं, सभी को सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जबलपुर-सागर समेत 14 जिलों में मध्यम से भारी बारिश- मौसम विभाग ने जबलपुर, सागर समेत 14 जिलों में मध्यम से भारी बारिश होने का अलर्ट जारी किया है। इनमें विदिशा, रायसेन, राजगढ़, बैतूल, नर्मदापुरम, नरसिंहपुर, निवाड़ी, जबलपुर, मंडला, डिंडौरी, कटनी, मैहर और उमरिया शामिल हैं। वहीं, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर में हल्की गरज के साथ बारिश की संभावना है। शाजापुर, भोपाल, सीहोर, देवास, इंदौर, नीमच, मंदसौर, खंडवा, बुरहानपुर, हरदा, छिंदवाड़ा, सिवनी, पांढुर्णा, दमोह, छतरपुर, पन्ना, सतना, आलीराजपुर, धार, बड़वानी, शहडोल, अनूपपुर, बालाघाट, रीवा, श्योपुर, ग्वालियर, आगर-मालवा और टीकमगढ़ जिलों में भी बारिश हो सकती है।

ट्रेन को केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने झंडी दिखाई

ग्वालियर-बेंगलुरु सीधी रेल सेवा की शुरुआत

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर से बेंगलुरु के लिए सीधी ट्रेन सेवा की शुरुआत हो गई है। गुरुवार दोपहर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने ग्वालियर रेलवे स्टेशन से ट्रेन नंबर 11085/86 ग्वालियर-एसएमवीटी बेंगलुरु साप्ताहिक एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान मंच पर एक तरफ केंद्रीय मंत्री सिंधिया के जिंदाबाद के नारे लग रहे थे तो दूसरी तरफ नरेंद्र सिंह तोमर और भारत सिंह कुशवाहा के नारे लग रहे थे।

ट्रेन का शुभारंभ ग्वालियर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 4 से किया गया। उद्घाटन समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव वर्चुअली शामिल हुए। सिंधिया ग्वालियर से इस ट्रेन में शिवपुरी, गुना तक गए।

उद्घाटन दिवस पर ट्रेन नंबर 01086 ग्वालियर से रवाना हुई

और 28 जून की सुबह एसएमवीटी बेंगलुरु पहुंचेगी। ट्रेन भोपाल, नागपुर, काचीगुड़ा, धोन और धर्मावरम होते हुए बेंगलुरु पहुंचेगी। इसमें कुल 22 कोच है। जिनमें स्लीपर, एसी जनरल और इकोनॉमी क्लास शामिल है।

सिंधिया, भरत सिंह कुशवाहा, जयभान सिंह पवैया एक साथ नजर आएं- कार्यक्रम के दौरान स्टेशन पर बने मंच पर सिंधिया के साथ ग्वालियर सांसद भरत सिंह कुशवाहा, पूर्व मंत्री जयभान सिंह पवैया भी नजर आए। इस ट्रेन को लेकर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और ग्वालियर सांसद भरत सिंह कुशवाहा ने दावा किया था कि उनकी वजह से मिली है। इसको लेकर कुछ टकराव भी था, लेकिन मंच पर दोनों एक साथ दिखें।

पत्नी की हत्या करने वाले को फांसी की सजा

उज्जैन कोर्ट ने कहा-मरने तक लटकाया जाए, बच्चों को नानी के घर भेजकर मारी थीं गोलियां

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में पत्नी की हत्या करने वाले आरोपी वाहिद लाला को कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई। घटना करीब 15 माह पुरानी धुलेंडी (होली) वाले दिन की है। वाहिद लाला ने अपने बच्चों को नानी के घर भेजकर पत्नी संजीदा बी को गोली मारी थी।

कोर्ट में गुरुवार को इस मामले में सजा सुनाते हुए फैसले में कहा कि दोषी को फांसी लगाकर तब तक लटकाया जाए जब तक उसकी मृत्यु न हो जाए। कोर्ट ने अवैध रूप से शस्त्र रखने पर 5 वर्ष के कठोर कारावास और 100 रुपए अर्थदंड की सजा भी सुनाई है।

पत्नी के चरित्र पर शक करता था- जिला अभियोजन अधिकारी राजेंद्र खांडेगर ने बताया कि एक साल चले केस में कोर्ट ने आरोपी को फांसी की सजा सुनाई है। एडीपीओ मिश्रीलाल चौधरी ने बताया कि वाहिद ने चरित्र शंका पर पत्नी को पेट कनपटी पर तीन गोली मारी थीं। उसे लगता था कि पत्नी का उसी के भतीजे से अवैध संबंध है। आरोपी वाहिद करीब 16 साल पहले हुई एक हत्या के मामले में भी जेल जा चुका था।

सतना टोल प्लाजा पर 24 लोगों ने कर्मचारियों को पीटा

फ्री में गाड़ी निकालने पर विवाद ; बिना नंबरों की बाइक से पहुंचे थे नकाबपोश

सतना (नप्र)। सतना के ओढ़की टोल प्लाजा पर 2 दर्जन नकाबपोश बदमाशों ने हमला कर दिया। हमला टोल टैक्स को लेकर हुए विवाद के बाद किया गया। घटना रामपुर बाघेलान थाना क्षेत्र में स्थित बुधवार शाम करीब साढ़े 7 बजे हुई। इसका वीडियो भी सामने आया है। जानकारी के अनुसार पहले कुछ लोग कार से टोल प्लाजा पर आए और बिना टैक्स दिए जाने की जिद करने लगे। कर्मचारियों के मना करने पर बहस

हुई। इसके बाद वे टैक्स देकर चले गए। एक घंटे बाद 15 मोटरसाइकिलों पर 24 से ज्यादा नकाबपोश हथियार लेकर लौटे।

बदमाशों ने कर्मचारियों को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा- हमलावरों ने टोल प्लाजा के कर्मचारियों पर हमला कर दिया। केबिन और कार्यालय में तोड़फोड़ की। कंप्यूटर समेत अन्य उपकरणों को नुकसान पहुंचाया। कर्मचारियों को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा। करीब एक दर्जन कर्मचारियों को चोट आई है। घटना के बाद कुछ राहगीरों ने बदमाशों का पीछा भी किया था।

सीसीटीवी में कैद हुई घटना- आधे घंटे तक हंगामा करने के बाद बिना नंबर की बाइक पर सवार बदमाश फरार हो गए। घटना टोल प्लाजा के सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। टोल प्लाजा मैनेजर जितेंद्र सिंह ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है।टीआई संदीप चतुर्वेदी के अनुसार कुछ संदिग्धों की पहचान की गई है। वे त्योंधरी और अहिरगांव के रहने वाले बताए जा रहे हैं। पुलिस की कई टीमें आरोपियों की तलाश में जुटी हैं।

आरोपियों की अब तक नहीं हुई शिनाख्त- रामपुर बघेलान टीआई संदीप चतुर्वेदी ने बताया कि सभी आरोपी नकाबपोश थे। लिहाजा उनकी पहचान के प्रयास किए जा रहे है। सीसीटीवी फुटेज को बारीकी से देखा जा रहा है। अभी तक किसी भी आरोपी की शिनाख्त नहीं हो पाई है।

टूरिज्म को बढ़ावा देने एमपी-यूपी के बीच एमओयू

लखनऊ में हुआ रोड शो, डिप्टी सीएम बोले- पर्यटन की असीम संभावनाएं

भोपाल (नप्र)। श्रीराम पथ गमन, श्रीकृष्ण पाथेय और बुद्ध सर्किट के रिसर्च और विकास की दृष्टि से मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के बीच एमओयू हुआ है। यूपी के लखनऊ में हुए कार्यक्रम में डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल की मौजूदगी में यह एमओयू किया गया। डिप्टी सीएम शुक्ल ने कहा कि मध्यप्रदेश में पर्यटन की असीम संभावनाओं से उन्नति के नए द्वार खुलेंगे।

लखनऊ के होटल ताज महल में पर्यटन रोड शो में पर्यटन व्यवसायियों, टूर ऑपरेटर्स, ट्रैवल एजेंट्स और होटल व्यवसाय से जुड़े लोग शामिल हुए। डिप्टी सीएम शुक्ल ने कहा कि किसी क्षेत्र में तीव्र गति से विकास 3 क्रांतियों के होने से होता है।

औद्योगिक क्रांति, हरित क्रांति और पर्यटन क्रांति। इन तीनों क्रांतियों से स्व-रोजगार और रोजगार के अवसर बनते हैं। मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश दोनों प्रदेश इन तीनों क्रांति के लिए सबसे उपयुक्त प्रदेश हैं।

यूपी के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश का

सांस्कृतिक रूप से जुड़ाव रहा है। हमारे रीति-रिवाज, त्योहार, खान-पान, रिश्ते-नाते एक जैसे हैं। मां गंगा से मां नर्मदा तक की यह यात्रा न केवल पर्यटकों को सुखद अनुभूति देगी बल्कि दोनों प्रदेश के संबंधों को भी प्रगाढ़ करेगी।

एमपी के पर्यटन, संस्कृति एवं धर्मस्व मंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने कहा कि पर्यटन किसी भी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास की रीढ़ है। वर्तमान में पर्यटन उद्योग वैश्विक अर्थव्यवस्था में सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में पर्यटन अधोसंरचनाओं के निर्माण और पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश अपनी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक और धार्मिक संपदा के लिए प्रसिद्ध है। मंत्री लोधी ने मध्यप्रदेश की पर्यटन नीति और निवेश के अवसरों पर चर्चा करते हुए सभी को आने और प्रदेश में पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए आमंत्रित किया।

गंगा-नर्मदा कॉरिडोर से खुलेगी पर्यटन की नई राह- पर्यटन एवं संस्कृति प्रमुख सचिव शिवशेखर शुक्ला ने कहा कि पर्यटन की दृष्टि से मध्यप्रदेश भारत का एक समृद्ध और विविधतापूर्ण राज्य है। उत्तरप्रदेश और मप्र के पर्यटन में काफी समानता है। बाबा महाकाल और बाबा काशी विश्वनाथ दुनियाभर के श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। दोनों ही ज्योर्तिलिंग को जोड़ने के लिए काशी विश्वनाथ महाकाल एक्सप्रेस संचालित होती है।

गंगा और नर्मदा पर्यटन कॉरिडोर प्रस्तावित परियोजना के तहत मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के प्रमुख धार्मिक और पर्यटन स्थलों को जोड़ा जाएगा। प्रयागराज, अयोध्या, वाराणसी, ओंकारेश्वर और महाकालेश्वर से गुजरने वाले इस गलियारे में दोनों राज्यों के बीच पर्यटन सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।

एमपी में अक्टूबर में होगा इवेंट

मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के पर्यटन व्यवसायियों, टूर ऑपरेटर्स, ट्रैवल एजेंट्स, होटल व्यवसाय से जुड़े लोगों के बीच सहयोग और साझेदारी को बढ़ावें के उद्देश्य से एमपी टूरिज्म बोर्ड ने इस पर्यटन रोड शो का आयोजन किया। यह रोड शो 11 से 13 अक्टूबर तक होने वाले मध्यप्रदेश ट्रैवल मार्ट और रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव की तैयारियों के चलते हुआ है। उत्तरप्रदेश प्रमुख सचिव मुकेश कुमार मेश्राम और अभिनेता पंकज त्रिपाठी भी मौजूद थे।

यूपी-एमपी की अच्छी कनेक्टिविटी

उत्तर प्रदेश से मध्यप्रदेश की यात्रा पहले से कहीं अधिक सुविधाजनक हो गई है। उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरों जैसे लखनऊ, वाराणसी, आगरा, कानपुर और प्रयागराज मध्यप्रदेश के ग्वालियर, खजुराहो, भोपाल, इंदौर और जबलपुर से हवाई यात्रा सुलभ है। इसके साथ ही रेल मार्ग से रीवा, ओरछा, ग्वालियर खजुराहो जुड़े हुए हैं। मध्यप्रदेश पहुंचने के बाद पर्यटकों के लिए मजबूत और सुगम सड़क नेटवर्क की सुविधा उपलब्ध है, जिससे राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थलों तक सरल और कम समय में सुविधापूर्वक यात्रा की जा सकती है।

कौशल, विकास और उद्यमशीलता के स्वर्णिम पथ पर मध्यप्रदेश

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

रीजनल इंडस्ट्री, स्किल एंड एम्प्लॉयमेंट कॉन्क्लेव

RISE शुभारंभ

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

द्वारा

27 जून 2025 । प्रातः 11:00 बजे । पोलो ग्राउंड, रतलाम

प्रमुख आकर्षण

- ₹ 2012 करोड़ से अधिक लागत की 94 औद्योगिक इकाइयों और क्लस्टर्स का भूमिपूजन/लोकार्पण
- 288 एमएसएमई इकाइयों के लिए ₹ 270 करोड़ की प्रोत्साहन राशि का वितरण
- 140 वृहद औद्योगिक इकाइयों को ₹ 425 करोड़ की वित्तीय सहायता का वितरण
- 538 एमएसएमई इकाइयों को भू-खंड आवंटन पत्र वितरण
- ₹ 6000 करोड़ से अधिक निवेश करने व 17600 से अधिक रोज़गार देने वाली 35 वृहद औद्योगिक इकाइयों को भूमि आवंटन हेतु आशय पत्र वितरण
- 4 लाख से अधिक हितग्राहियों को स्व-रोज़गार के लिए ₹ 3861 करोड़ का ऋण वितरण
- थीमैटिक सेशन
- वन-टू-वन मीटिंग
- एमओयू एक्सचेंज
- प्रदर्शनी

फोकस सेक्टर

- कृषि, खाद्य प्रसंस्करण एवं डेयरी
- ज्वेल्स एंड ज्वेलरी
- नवीकरणीय ऊर्जा
- फार्मा, बायोटेक, रसायन
- लॉजिस्टिक्स
- पर्यटन एवं टेक्सटाइल

D-11054/25

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP jansamparkMP